बाइबल क्या शिक्षा देती है ?

(भाग दो)

द्वितीय संस्करण
1998

लेखक
सनी डेविड

सत्य-सुसमाचार रेडियो संदेशमाला

प्रकाशक:
मसीह की कलीसिया
पोस्ट बॉक्स 3815
नई दिल्ली 110049

WHAT DOES THE BIBLE TEACH?
Vol. 2
By Sunny David

Second Printing 1998

2000 Copies

मुद्रक:
प्रिंट इण्डिया,
ए-३८/२ मायापुरी, नई दिल्ली

सूचना

सत्य सुसमाचार
सप्ताह में दो बार
रेडियो पर सुनिये

प्रत्येकः

बृहस्पतिवार को रात में नौ बजे तथा
रविवार को 8:45 पर

ये कार्यक्रम रेडियो श्रीलंका (सिलोन) से 19, 25 तथा 41 मीटर बैंड पर सुने जा सकते हैं।

प्रचारक :

सनी डेविड

प्रस्तुतकर्त्ता :

मसीह की कलीसिया

नई दिल्ली

परिचय

प्रस्तुत रेडियो प्रवचनों की इस पुस्तक में लेखक ने अनेकों प्रश्नों को लेकर उनके उत्तर बाइबल से दिये है। आप इन प्रवचनों को रेडियो श्री लंका से सुन सकते हैं तथा इनको अब पुस्तक के रूप में पढ़ भी सकते हैं। मेरा आप से आग्रह है कि आप इन बातों के विषय में परमेश्वर के वचन की ओर जाएं और देखें कि यह बातें यूं ही हैं या नहीं। मेरा पूर्ण विश्वास है कि यदि आप ऐसा करेंगे तो आप जानेंगे कि इन सारे प्रश्नों के उत्तर परमेश्वर के वचन के अनुसार हैं।

लेखक ने इस पुस्तक में कुछ ऐसे प्रश्नों को पूछा है : जैसे प्रभु यीशु का अनुसरण करने के विषय में बाइबल क्या बताती है ? अश्चर्य-क्रम क्या है ? आज्ञा मानना तथा नया जन्म क्या है ? और ऐसे ही अन्य अनेक प्रश्न जो धार्मिक संसार में अक्सर पूछे जाते हैं। ज़रा सोचिए कि क्या ये प्रश्न आवश्यक नहीं हैं? ऐसे ही प्रश्नों के ऊपर आप की आत्मा का उद्धार निर्भर है। मुझे प्रसन्नता है कि इन प्रवचनों को रेडियो स्टेशन के लिये तैयार करने का सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ है। मेरी यह प्रार्थना है कि ये सब बातें परमेश्वर की महिमा का कारण होंगी।

विषय सूची

बाइबल क्या शिक्षा देती है :

1.	मसीह के अनुयायी बनने के विषय में	1
2.	आश्चर्यकर्मों के विषय में	6
3.	आज्ञा मानने के विषय में	12
4.	नए जन्म के विषय में	18
5.	विश्वास के विषय में	24
6.	आशा के विषय में	29
7.	आराधना के विषय में	35
8.	प्रार्थना के विषय में	41
9.	कलीसिया के विषय में	47
10.	पश्चाताप के विषय में	53
11.	स्वर्ग के विषय में	59
12.	नरक के विषय में	65

मसीह के अनुयायी बनने के विषय में

आज मैं आप को यह बताना चाहता हूं कि प्रभु यीशु मसीह का एक अनुयायी वास्तव में कौन है और किस तरह से कोई मनुष्य यीशु मसीह का एक अनुयायी बन सकता है। अनेक लोग आज इस विषय में अनजान हैं। प्रभु यीशु इस जगत में किसी धर्म को स्थापित करने नहीं आया था, परन्तु वह पाप में खोए हुए लोगों को एक मार्ग दिखाने आया था। और जो लोग उसके बताए हुए मार्ग पर चलते हैं वे ही वास्तव में उसके अनुयायी हैं। परन्तु पृथ्वी पर आज अनेक ऐसे लोग हैं जो उसके अनुयायी तो कहलाना चाहते हैं लेकिन वे उसकी आज्ञाओं पर नहीं चलते। वे केवल नाम से ही मसीह के अनुयायी कहलाना चाहते हैं। उनके लिए मसीह के अनुयायी होने का अर्थ है, घर में सलीब का एक निशान रख लेना और दो चार फोटो लगा लेना और एक दो त्योहार मना लेना। फिर, कुछ लोगों का मत है कि मसीह का एक अनुयायी बनने से सब बातों से आज़ादी मिल जाती है। उनका विचार यह है कि मसीह क्योंकि हमारे पापों के लिए मर गया था इसलिए हम चाहे जैसा भी जीवन क्यों न व्यतीत करें वह हमें क्षमा कर देगा। परन्तु ये सभी विचार अनुचित हैं।

एक मसीही या मसीह का अनुयायी वास्तव में वह इन्सान है जो पाप के लिये मर चुका है। प्रेरित पौलुस लिखकर बाइबल में एक जगह कहता

है कि, "हम जब पाप के लिये मर गए तो फिर आगे को उसमें क्योंकर जीवन बिताएं ? क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उस के साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे। क्योंकि हम जानते हैं, कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें।" (रोमियों ६:२-६)। सो इस प्रकार, बाइबल के अनुसार वास्तव में मसीह का अनुयायी वह मनुष्य है जिसने पाप के दासत्व से स्वतंत्रता प्राप्त कर ली है। मसीह का अनुसरण करने से पहिले वह पाप में था, परन्तु उसका अनुयायी बनने के कारण वह पाप से मुक्त हो गया। यहां इस बात पर भी ग़ौर करें कि कोई भी मनुष्य पैदायशी मसीही नहीं हो सकता यानि कोई भी मनुष्य जन्म से मसीह का अनुयायी नहीं है। परन्तु मनुष्य को मसीह का अनुयायी बनना पड़ता है। यह एक व्यक्तिगत निश्चय है जो प्रत्येक मनुष्य को स्वयं अपने ही लिये करना पड़ता है। जब मनुष्य यीशु मसीह के क्रूस की कथा को सुनता है; जब वह अपने मन में यह अनुभव करता है कि पाप का परिणाम कितना भयानक है, अर्थात् वह मनुष्य को परमेश्वर से दूर रखता है और मनुष्य को अनन्त विनाश की ओर ले जाता है। जब वह इस बात का अनुभव करता है कि यीशु मसीह मेरे पापों का प्रायश्चित करने के लिये क्रूस के ऊपर मर गया है। तो वह उसमें विश्वास लाता है और पाप से अपना मन फिराता है, और प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु और गाड़े जाने और जी उठने की समानता में उसके साथ एक हो जाने के लिये बपतिस्मा लेता है, अर्थात् पानी के भीतर दफ़न होता है या गाड़ा

जाता है और उसमें से बाहर आता है। इसीलिये प्रेरित पौलुस कहता है, मसीह के अनुयायीयों से, कि "हम जब पाप के लिये मर गए तो फिर आगे को उस में क्योकर जीवन बिताएं ? क्या तुम नहीं जानते कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया: तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया ? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।" यानि मसीह का अनुयायी बनने के द्वारा मनुष्य पाप के अपने पुराने जीवन से मुक्त हो जाता है, उस जीवन के लिये वह मर जाता है, और धार्मिकता के नए जीवन का आरम्भ करता है। इस कारण जो मनुष्य वास्तव में प्रभु यीशु मसीह का एक अनुयायी है वह मुंह से गाली नहीं बकता, वह शराब और सिगरेट नहीं पीता, वह नशा नहीं करता, वह कोई गन्दा काम नहीं करता है। क्योंकि वह यीशु मसीह का अनुयायी है; उसके जीवन का आदर्श यीशु मसीह है, वह उसके जीवन का अनुसरण करता है। पवित्र बाइबल में लिखा है कि यीशु मसीह "तुम्हारे लिये दुख उठा उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो। न तो उसने पाप किया, और न ही उसके मुंह से छल की कोई बात निकली। वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था। वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिस से हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिए जीवन बिताएं। (१ पतरस २:२१-२४)। सो एक मसीही या मसीह का अनुयायी वास्तव में वह मनुष्य है जो पाप के लिए मर चुका है और अपना जीवन धार्मिकता के लिये अर्थात् परमेश्वर की आज्ञानुसार चलने के लिये बिताता है।

प्रभु यीशु ने अपने अनुयायीयों को सम्बोधित करके एक बार कहा था, कि तुम पृथ्वी के नमक हो और तुम जगत की ज्योति हो। (मत्ती ५:१३-१६)। अर्थात् उसके अनुयायीयों के भीतर नमक और ज्योति के

से गुण विद्यमान् होने चाहिए। नमक वस्तुओं को स्वादिष्ट बनाता है और उन्हें खराब होने से बचाता है। इसी प्रकार उनके जीवन ऐसे होने चाहिए कि उनके जीवनों के सम्पर्क में आकर अन्य लोगों के फीके तथा नीरस जीवन स्वादिष्ट बन जाएं और उनकी संगति में आकर बुरे लोग अच्छे बन जाएं। और ऐसे ही ज्योति की नाईं उनके भीतर यह विशेषता होनी चाहिए, कि जैसे ज्योति छिपी हुई वस्तुओं को प्रकट करती है और अन्धकार को दूर करती है। वैसे ही उनकी धार्मिकता के प्रकाश के द्वारा अन्य लोगों के जीवनों में उनके पाप प्रकट हों जाएं, और उनकी संगति में आकर वे अपने पापों से फिर जाएं। क्या आप मसीह के एक अनुयायी हैं ? क्या आप का जीवन वास्तव में वैसा ही है जैसा कि प्रभु चाहता है? प्रभु यीशु इस पृथ्वी पर हमें एक आदर्श देने आया था, वह हमें यह बताने आया था कि परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी बड़ाई तथा प्रशंसा के लिये बनाया है। और न केवल उसने सिखाया परन्तु उसने एक ऐसा आदर्श-पूर्ण और शिक्षाप्रद जीवन व्यतीत भी किया जो परमेश्वर की बड़ाई के योग्य था। और यदि हम उसका सा जीवन व्यतीत करने का प्रयत्न नहीं करते हैं तो आज हम उसके अनुयायी कदापि नहीं ठहर सकते। न केवल उसके अनुयायी बनने की ही हमें आवश्यकता है परन्तु उसके आदर्श का पालन करना भी ज़रूरी है।

क्योंकि केवल मसीही नाम धारण करके हम स्वर्ग में नहीं जा सकते परन्तु हमें उस मार्ग और सच्चाई पर भी चलना है जिसे उस ने प्रकट किया है; उस नए जीवन को पहिनना है जो हमें उस मे मिलता है। बाइबल में लिखकर प्रेरित पौलुस एक जगह कहता है कि बहुतेरे लोग ऐसी चाल चलते हैं कि वे अपने चाल-चलन से मसीह के क्रूस के बैरी हैं। और वह कहता है कि उन लोगों का अन्त विनाश है, और उनका ईश्वर उनका पेट है, और वे अपनी लज्जा की बातों पर घमन्ड करते हैं, और पृथ्वी की वस्तुओं पर मन लगाए रहते हैं। (फिलिप्पियों ३:१८,१९)। इस प्रकार के लोग मसीही कहलाने के योग्य नहीं हैं, वे अपने गलत चाल-चलन से

मसीह क,पवित्र नाम को गन्दा करते हैं, और उन बहुतेरे लोगों के लिये जो मसीह के पास आना चहते हैं ठोकर का कारण बनते हैं।

मसीही जीवन वास्तव में जगत में सबसे उत्तम जीवन है। यह एक ऐसा जीवन है जिसके द्वारा परमेश्वर की बड़ाई होती है। यह एक ऐसा जीवन है जिसके भीतर उद्धार का आनन्द और स्वर्ग में प्रवेश करने की आशा है। और यह उत्तम जीवन मनुष्य को प्रभु यीशु मसीह से प्राप्त होता है। प्रभु यीशु कहता है, "हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो ; और मुझ से सीखो ; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं : और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जुआ सहज और मेरा बोझ हल्का है" (मत्ती ११:२८-३०)। क्या आपके जीवन में पाप का बोझ है ! क्या आपके मन में अशान्ति है ? क्या आप आत्मिक आनन्द और स्वर्गिय आशा से वंचित है ? "मेरे पास आओ" प्रभु यीशु कहता है, "मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।" यदि आप अपने सारे मन से उसमें विश्वास लाकर उसकी आज्ञा का पालन करेंगे और उसके जीवन को अपने जीवन का आदर्श बना लेंगे, तो न केवल वह आपके सारे पापों को ही क्षमा करेगा परन्तु वह आपको जीवन में उद्धार का आनन्द और स्वर्ग में प्रवेश करने की आशा भी देगा। उसके जीवन का अनुसरण करने के द्वारा आप का सम्पूर्ण जीवन बदल जाएगा। परमेश्वर उसके पास आने के लिये आप को सामर्थ दे, ताकि न केवल इस जीवन में परन्तु आनेवाले जीवन में भी आप उन सब आशीषों को प्राप्त कर सकें जो परमेश्वर उसके द्वारा, अपने सब लोगों को देना चाहता है।

आश्चर्यकर्मों के विषय में

आज हम एक ऐसी सदी में रहते हैं जिस में लोग बड़े ही जानकार और उन्नतिशील हैं। हमारे पूर्वज जिन बातों की कल्पना भी नहीं कर सकते थे वे ही बातें आज हमारे लिये दिन-प्रतिदिन की सच्चाई हैं। वास्तव में पढ़ाई-लिखाई के द्वारा लोगों में एक बहुत बड़ी जाग्रति आई है। और ऐसे ही रेडियो और टेलेविज़न और इस प्रकार के अन्य साधनों के द्वारा मनुष्य आज बड़ा ही जानकार बन गया है। दुनिया भर की खबरें आज मनुष्य को रेडियो तथा समाचार पत्रों के द्वारा सुबह बिस्तर पर से उठते ही पता चल जाती हैं। उन्नति के इस युग में मनुष्य बड़ा ही समझदार तथा बुद्धिमान् बनता जा रहा है। बहुत सा अन्धविश्वास छट रहा है और बहुत सी बातें प्रकाश में आती जा रही हैं। परन्तु उन्नति तथा प्रगति के इस युग में ; समझ तथा बुद्धि की इस सदी में आज भी लाखों लोग धार्मिक या आत्मिक दृष्टिकोण से अन्धकार में है। लोग पीढ़ियों से चले आ रहे अन्धविश्वास के दासत्व में कैद हैं। बिना जाने और समझे लोग आज भी उन्हीं बातों में लौलीन हैं जिन्हें लोग शताब्दियों से अन्धविश्वास के कारण करते चले आए हैं। यह दर्शाता है कि यद्यपि मनुष्य शारीरिक दृष्टिकोण से तो उन्नति कर रहा है परन्तु आत्मिक रुप से वह पिछड़ रहा है क्योंकि यद्यपि परमेश्वर की सच्चाई उसके पवित्र वचन की पुस्तक में प्रत्यक्ष वा प्रकट है तौभी लोग मनुष्यों की ठग-विद्या में फंसकर आत्मिक रूप से कंगाल होते जा रहे हैं। यह बड़े ही अफसोस और दुख कि बात है

कि लोग जान-बूझकर अन्धकार में खोए रहना चाहते हैं।

पृथ्वी पर लगभग सभी जगह आज बहुत से ऐसे लोग हैं जो कहते हैं कि हम कोई आश्चर्यकर्म कर सकते हैं और वे अपनी चतुराई से भोले-भाले लोगों को ठग रहें हैं। यहां तक कि बाइबल और प्रभु यीशु मसीह के नाम से भी आज बहुतेरे लोग ऐसे-ऐसे काम कर रहे हैं। प्रेरित पौलुस बाइबल में एक जगह लिख कर यूं कहता है, "अब हे भाईयो, में तुम से बिनती करता हूं, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुम ने पाई है, फूट पड़ने, और ठोकर खाने के कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो; और उन से दूर रहो। क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की नहीं, परन्तु अपने पेट की सेवा करते हैं; और चिकनी चुपड़ी बातों से सीधे-सादे मन के लोगों को बहका देते हैं।" (रोमियों १६:१७,१८)। जो लोग आज आश्चर्यकर्मों को करने का दावा करते हैं वे या तो स्वयं अपनी बड़ाई के लिये ऐसा करते हैं या फिर पैसा कमाने के लिए ऐसा करते हैं। वास्तव में, आज पृथ्वी पर कोई भी ऐसा मनुष्य नहीं है जो एक भी आश्चर्यकर्म कर सकता है।

बाइबल में हम आश्चर्यकर्मों के विषय में पढ़ते हैं। आश्चर्यकर्म करने का अर्थ है कोई ऐसा काम करना जो नियम अनुसार असम्भव है। आश्चर्यकर्म का तात्पर्य जादू-टोने इत्यादि से नहीं है, जो लोगों को बुद्धु बनाने तथा ठगने के लिये किए जाते हैं। परन्तु आश्चर्यकर्मएक ऐसी वास्तविकता है जो प्रत्यक्ष तथा प्रकट है परन्तु तौभी नियम के विरुद्ध है। बाइबल में हम अनेकों ऐसे आश्चर्यकर्मों के बारे में पढ़ते हैं जिन्हें परमेश्वर तथा उसके भविष्द्वक्ताओं ने किया था। इसी प्रकार प्रभु यीशु ने और उसके प्रेरितों ने भी बहुत से आश्चर्यकर्म किए थे। और यहां विशेष रूप से मैं उन आश्चर्यकर्मों का वर्णन करना उचित समझता हूं जिन्हें यीशु ने और उसके प्रेरितों ने किया था। वास्तव में यीशु ने इतने अधिक आश्चर्यकर्म किए थे कि उन सब का वर्णन हमें बाइबल में भी नहीं मिलता। न केवल उसने बीमारों को ही चंगा किया था परन्तु

उसने अनेक अन्य सामर्थ के काम भी किए थे। कम से कम दो बार उस ने लोगों की बड़ी-बड़ी भीड़ को आश्चर्यकर्म करके भोजन खिलाकर तृप्त किया था एक बार लोगों की संख्या पाँच हज़ार की थी और दूसरी बार उनकी गिनती चार हज़ार थी। यीशु के पास कुल मुट्ठी भर भोजन था और उसने उसी थोड़े से भोजन को अपनी सामर्थ से इतना अधिक कर दिया था कि न केवल लोगों ने भर पेट खाया ही था परन्तु कई टोकरे भरके बचे हुए रोटियों के टुकड़े उठाए गए थे। क्या कोई मनुष्य आज इस प्रकार का आश्चर्य-कर्म कर सकता है? फिर हम पढ़ते हैं, कि एक बार उसके चेले नाव में बैठकर जा रहे थे और वह रात का समय था, कि तभी एकाएक उन्हें कोई पानी पर चलकर अपने पास आते हुए दिखाई दिया। उसे देखकर वे निपट डर गए। परन्तु यीशु ने उनसे कहा, कि "डरो मत, मैं हू"। फिर, जहां तक लोगों को चंगाइ देने का प्रश्न है, बाइबल कहती है, कि उसने हर एक को, जो उसके पास आए, अपनी सामर्थ से चंगा किया। और यही बात हम उसके प्रेरित चेलों के बारे में भी पढ़ते हैं। यीशु की मृत्यु तथा जी उठने और स्वर्ग पर वापस चले जाने के बाद जब उन्हों ने उसके सुसमाचार का प्रचार करना आरम्भ किया था तो लिखा है "कि प्रेरितों के हाथों से बहुत चिन्ह और अद्भुत काम लोगों के बीच में दिखाए जाते थे...यहां तक कि लोग बीमारों को सड़कों पर ला-लाकर, खाटों और खटोलों पर लिटा देते थे, कि जब पतरस आए, तो उसकी छाया ही उन म से किसी पर पड़ जाए। और यरूशलेम के आस-पास के नगरों से भी बहुत लोग बीमारों और अशुद्ध आत्माओं के सताए हुओं को लाकर, इकट्ठे होते थे, और सब अच्छे कर दिये जाते थे।" (प्रेरितों ५:१२,१५,१६)।

फिर, यीशु के बारे में हम बाइबल में पढ़ते है कि उसके पास ऐसी सामर्थ थी कि लोग उसे छूकर चंगे हो जाते थे। मरे हुए उसकी आवाज़ सुनकर जी उठते थे। ओर जैसे कि अभी हम ने बाइबल में से उसके प्रेरितों के बारे में भी पढ़ा कि जितने भी लोग अपाहिज, लंगड़े,

अन्धे इत्यादि उनके पास लाए जाते थे वे सबके सब चंगे कर दिए जाते थे। ऐसे ही हम प्रभु यीशु के सम्बन्ध में भी पढ़ते हैं, कि उसके निकट जो कोई भी आया वह तुरन्त चंगा हो गया। चंगाई के लिए उन्हें कोई विशेष सभा का आयोजन नहीं करना पड़ता था, और न किसी निश्चित समय को रखना पड़ता था। मार्ग में चलते-चलते यीशु के वस्त्र को लोग छू लेते थे और वे तुरन्त चंगे हो जाते थे। एक जगह लोग मरे हुए एक नौजवान को गाडने के लिये ले जा रहे थे, कि यीशु ने उस की विधवा मां को रोते हुए देखकर उस पर तरस खाया, और अर्थी को छूकर उस नौजवान को जिन्दा कर दिया। किन्तु क्या कोई मनुष्य ऐसे आश्चर्यकर्म आज कर सकता है ? फिर इस बात पर भी ध्यान दें, कि जिन लोगों को यीशु तथा उसके प्रेरितों ने चंगा किया था वे सब बड़े-बड़े रोगों से पीड़ित थे। किसी के हाथ सूखे थे; कोई जन्म से अन्धा या लंगड़ा था; कोई कुबड़ा था तो कोई कोढ़ी था। परन्तु ये सब आश्चर्यकर्म यीशु ने क्यों किए ? बाइबल में लिखा है, "यीशु ने और भी बहुत चिन्ह चेलों के सामने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए परन्तु ये इसलिए लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है : और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।" (यूहन्ना २०:३०,३१)। यीशु ने आश्चर्यकर्म अपने चेलों के सामने दिखाए, उन्हें यह विश्वास दिलाने के लिये कि वही वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है। यही कारण है कि उन चेलों ने यीशु और उसके सुसमाचार को प्रचार करने के लिये अपने प्राणों को भी दे दिया क्योंकि उनका यह दृढ़ विश्वास था कि वह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है। और उन्हीं चेलों ने यीशु के आश्चर्यकर्मों के बारे में बाइबल के नए नियम में लिखा है, ताकि आज हम उनकी साक्षी को पढ़कर यीशु में विश्वास लाएं कि वह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है। ठीक इसी कारण से यीशु ने अपने चेलों को भी यही सामर्थ दी थी कि वे उसके बाद बड़े-बड़े आश्चर्यकर्म करें ताकि लोग

उनके आश्चर्यकर्मों को देखकर यह विश्वास लाएं कि जिसका प्रचार वे कर रहे हैं वह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है, क्योंकि वे लोगों को बताते थे कि जो आश्चर्यकर्म वे कर रहे हैं वे सब यीशु की सामर्थ से कर रहे हैं। बाइबल में लिखा है, कि जब यीशु स्वर्ग पर उठा लिया गया था तो उसके चेलों ने "निकलकर हर जगह प्रचार किया, और प्रभु उन के साथ काम करता रहा, और उन चिन्हों के द्वारा जो साथ-साथ होते थे वचन को दृढ़ करता रहा।" (मरकुस १६:२०)। सो प्रभु ने अपने वचन को दृढ़ करने के लिये अपने चेलों को आश्चर्यकर्मों को करने की सामर्थ दी थी। क्योंकि उसके सुसमाचार का वचन उस समय लिखित रूप में लोगों के पास उपलब्ध नहीं था। सो आवश्यक था कि लोग देखकर विश्वास लाएं। परन्तु प्रभु द्वारा दृढ़ किया गया उसका वचन आज हमारे पास विद्यमान् है। हमें आज उस में विश्वास लाने के लिये किसी आश्चर्यकर्म को देखने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु उसके वचन को पढ़कर या सुनकर आज हमें उसमें विश्वास होता है। बाइबल में लिखा है कि "विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है।" (रोमियों १०:१७)। इसलिये जब प्रभु का वचन दृढ़ हो गया; जब उसका वचन लिखित रूप में लोगों के पास आ गया तो फिर आश्चर्यकर्मों का कोई उद्देश्य ही नहीं रहा। इस कारण प्रभु यीशु के आरम्भिक चेलों की मृत्यु के बाद पृथ्वी पर कोई ऐसा मनुष्य नहीं रहा और न आज है, जो उसके समान और उसके प्रेरितों के समान आश्चर्यकर्म कर सकता है।

परन्तु, फिर भी आज हम देखते हैं कि बहुतेरे लोग यीशु के प्रेरित के समान लोगों को चंगाई देने का दावा करते हैं। वे चंगाई देने के लिए बड़ी-बड़ी सभाओं का आयोजन करते हैं और अपनी चतुराई से भोले-भाले लोगों को मूर्ख बनाते हैं। सच्चाई तो यह है कि वे एक भी ऐसा सामर्थ का काम नहीं कर सकते जैसे कि यीशु के प्रेरित किया करते थे। परन्तु वे कहते हैं, कि यीशु कल और आज एकसा है। क्या

परमेश्वर कल और आज एक सा है? तो फिर वह आज मिट्टी से मनुष्य को क्यों नहीं बना रहा है, जैसे उस ने आदम को बनाया था? वह स्वर्ग से भोजन या मन्ना गिराकर आज अपने लोगों को क्यों नहीं खिला रहा है, जैसे उसने अपने लोगों को जंगल में खिलाया था? निःसंदेह, परमेश्वर आज और कल एक सा है; उसकी सामर्थ एक सी है; वह आज भी सामर्थ के बड़े-बड़े काम कर सकता है। वह सब कुछ कर सकता है। परन्तु आज वह ऐसे आश्चर्यकर्मों को किसी के भी द्वारा नहीं कर रहा है जिन्हें उसने पहिले किया था, क्योंकि आज उनकी कोई आवश्यकता नहीं है। उसनें आज हमें अपना वचन दिया है; अपनी सम्पूर्ण इच्छा को दिया है, ताकि हम उसके वचन पर चलकर उस की इच्छा को पूरा करें।

यदि इस विषय में आप और अधिक जानकारी पाना चाहते हैं तो आप मुझे सत्य सुसमाचार के पते पर लिख सकते हैं। प्रभु आप को अपने वचन को समझने के लिये शक्ति दे।

आज्ञा मानने के विषय में

अपने प्रतिदिन के जीवन में हम सब इस बात से परिचित हैं कि मनुष्य के लिये आज्ञा मानना बड़ा ही आवश्यक है। प्रत्येक माता-पिता की यह इच्छा है कि उनके बच्चे उनकी आज्ञा मानें। हम अपने बच्चों को आरम्भ से ही आज्ञा मानना सिखाते हैं। स्कूलों में आज्ञा मानने की आवश्यकता पर बल दिया जाता है। दफ़्तर हों या फ़ैक्टरी हों जहां कहीं भी लोग काम करतें हैं उन्हें आज्ञा माननी पड़ती है। जब हम बाइबल को पढ़ते है, तो हम देंखते हैं कि इस पुस्तक की शिक्षाओं में सब से अधिक बल आज्ञा मानने के ऊपर दिया गया है। एक जगह बाइबल में हम इस प्रकार पढ़ते हैं "जितनी बातें पहले से लिखी गईं वे हमारी ही शिक्षा के लिए लिखीं गई हैं।" (रोमियों १५:४)। जिन लोगों के जीवनों के सम्बन्ध में हम, बाइबल में पढ़ते हैं उनकें जीवन से एक बड़ी हीं महत्वपूर्ण शिक्षा हमें आज यह मिलती है कि उनमें से जितनों ने परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन किया उन्हें परमेश्वर ने बड़ा ही आशीषित किया, परन्तु जिन लोगों ने उसकी आज्ञाओं को नहीं माना उन्हें उसने दण्ड दिया। और बाइबल में लिखा है, कि ऐसे ही सब लोग जो उसकी आज्ञाओं को मानते हैं अपने जींवन के अन्त में स्वर्ग में आशीष पाएंगे। परन्तु जो लोग उसकी आज्ञाओं को नहीं मानते हैं वे नरक में अनन्त दन्ड पाएंगे आज बहूतेरे लोग एक बहुत बड़ी गलती यह करते हैं कि वे परमेश्वर के स्वभाव में केवल प्रेम को ही देखते हैं। और वह भी इस प्रकार के प्रेम को जो अच्छाई और

बुराई के बीच कोई अन्तर नहीं देखता है। परन्तु यदि परमेश्वर धर्मी तथा अधर्मी और पवित्र तथा अपवित्र और अच्छे तथा बुरे दोनों को ही स्वीकार कर लेगा और सब को अपने स्वर्ग में स्थान दे देगा तो फिर अच्छा, पवित्र तथा धर्मी जीवन व्यतीत करने की क्या आवश्यकता है? तब हम जैसा चाहें जीवन व्यतीत कर सकते हैं। परन्तु बाइबल हमें बताती है कि जो सच्चा तथा जीवता परमेश्वर है, जिसने सम्पूर्ण जगत तथा मनुष्य को बनाया है, वह परमेश्वर न केवल प्रेम है परन्तु वह पवित्र तथा धर्मी भी है; वह ज्योति तथा सच्चा न्यायी भी है। और इसलिये वह अपवित्र तथा अधर्मी लोगों के साथ संगति नहीं रख सकता; वह ज्योति होकर अन्धकार के काम करनेवालों के साथ नहीं रह सकता, और सच्चा न्यायी होने के कारण वह धर्मी तथा अधर्मी दोनों को एकसा फल नहीं दे सकता।

बाइबल में आरम्भ से अन्त तक हम ऐसे अनेक लोगों के बारे में पढ़ते हैं जिन्होंने या तो परमेश्वर की आज्ञा न मानने के कारण दन्ड पाया या फिर उसकी आज्ञा मानने के कारण आशीष पाई। वे सब लोग आज हमारे सामने उदाहरण हैं। उनके जीवनों को परमेश्वर ने बाइबल में इसीलिये लिखवाया है, ताकि उन सब लोगों के जीवनों से हम शिक्षा पाएं। क्यों आदम और हव्वा मर गए या परमेश्वर से अलग हो गए थे? क्या इसलिये नहीं कि उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया था? मूसा क्यों प्रतिज्ञा किए देश के भीतर प्रवेश नहीं करने पाया? क्या इसलिये नहीं कि उसने परमेश्वर की आज्ञा को तोड़ा था? परन्तु फिर क्यों परमेश्वर ने नूह और उसके परिवार को महान् जल-प्रलय से बचा लिया था? क्यों परमेश्वर ने इब्राहीम को अपना मित्र कहकर सम्बोधित किया था? क्या इसका कारण यह नहीं था कि उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा को माना था, और बिल्कुल वैसे ही माना था जैसे कि परमेश्वर ने उनसे कहा था? नूह और इब्राहीम को परमेश्वर की आज्ञा से आश्चर्य तो अवश्य हुआ होगा, क्योंकि जो

परमेश्वर ने उनसे करने को कहा था वह मनुष्य की समझ से परे था। परन्तु तौभी हम पढ़ते हैं कि उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा को उसके बताए वचन अनुसार माना था।

किन्तु, इस सम्बन्ध में हमारे सामने सबसे बड़ा उदाहरण स्वयं प्रभु यीशु मसीह हैं। बाइबल में एक जगह हम यूं पढ़ते हैं: "इस कारण जबकि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हमको घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकनेवाली वस्तु और उलझानेवाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिस में हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें। और विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें; जिसने उस आनन्द के लिए जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके क्रूस का दुख सहा; और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा। इसलिये उस पर ध्यान करो, जिसने अपने विरोध में पापियों का इतना वाद-विवाद सह लिया, कि तुम निराश होकर हियाव न छोड़ दो।" (इब्रानियों १२:१-३)। यहां जिस विशेष बात के ऊपर हमारा ध्यान दिलाया जा रहा है, वह यह है कि यीशु हमारा आदर्श है; हम उसकी ओर देखकर चलें। क्योंकि उस परमेश्वर के पवित्र पुत्र ने पापियों के हाथों से दुख उठाया, उसने उनके थप्पड़ और घूंसे खाए; उन्होंने उसका निरादर किया और उसे कीलों से क्रूस के ऊपर ठोंक कर आकाश और पृथ्वी के बीच में लटका दिया। परन्तु यीशु ने उन सब बातों को सह लिया क्योंकि उसे मालूम था कि उसके लिये परमेश्वर की यही इच्छा है, कि वह पापियों के लिये पापी ठहरे और जगत के प्रत्येक पापी का दन्ड उसे मिले, और सबके पापों का प्रायश्चित करने के लिये वह क्रूस के ऊपर मारा जाए। इसलिये बाइबल कहती है कि "पुत्र होने पर भी, उसने दुख उठा-उठाकर आज्ञा माननी सीखी। और सिद्ध बनकर, अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिये सदा-काल के उद्धार का कारण हो गया।" (इब्रानियों ५:८,९)। पुत्र होने पर भी! अर्थात् वह परमेश्वर का एकलौता पुत्र था; वह परमेश्वर के समान

पवित्र था, उसमें स्वयं कोई बुराई नहीं थी, परन्तु फिर भी दुख उठा-उठाकर उसने आज्ञा माननी सीखी। सो बाइबल में हमें यह शिक्षा मिलती है कि "जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। बरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रकट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।" (फिलिप्पियों २:५-८)। यानि, यीशु मनुष्य बनकर परमेश्वर का यहां तक आज्ञाकारी रहा कि परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिये उसने न केवल मृत्यु बल्कि भयानक तथा दर्दनाक क्रूस की मृत्यु भी पापियों के लिये सह ली। और हम यह भी देखते हैं कि वह अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिये उद्धार का कारण बना। अर्थात् प्रायश्चित-पूर्ण उसकी मृत्यु के द्वारा केवल वही लोग अपने पापों से उद्धार पाएंगे जो उसकी आज्ञा को मानते हैं।

बहुतेरे लोगों का आज यह विचार है कि यदि हम यीशु में केवल यह विश्वास कर लें कि वह हमारे पापों के लिए क्रूस के ऊपर मर गया था तो हम अपने पापों से उद्धार पाकर उसके स्वर्ग में प्रवेश पा लेंगे, परन्तु प्रभु यीशु का यह प्रश्न आज भी ऐसे लोगों के लिये एक चुनौती है "कि जब तुम मेरा कहना नहीं मानते, तो क्यों मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, कहते हो?" (लूका ६:४६)। न्याय के दिन, प्रभु यीशु ने कहा, बहुतेरे लोग मुझ से कहेंगे कि, हे प्रभु हम तेरे विश्वासी हैं और हम ने तेरे नाम से बहुत से काम किए हैं, परन्तु यीशु ने कहा था कि उस समय मैं उन लोगों से कहूंगा कि मैं तुम को नहीं जानता, तुम मेरे पास से चले जाओ क्योंकि "जो मुझ से, हे प्रभु, हे प्रभु कहता हैं, उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश

नहीं करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।" (मत्ती ७:२१-२७)।

मैं यीशु के सुसमाचार का प्रचार कर सकता हूं ; मैं उसके द्वारा परमेश्वर से प्रार्थनाएं कर सकता हूं ; मैं उसके वचन की शिक्षा दे सकता हूं ; मैं उस के नाम से और भी बहुत से काम कर सकता हूं। परन्तु यदि मैं उसकी आज्ञाओं को नहीं मानता; और जो कुछ वह कहत है मैं वह नहीं करता, तो उसमें मेरा विश्वास और जो कुछ मैं उसके नाम से करता हूं वह सब व्यर्थ है। उसकी आज्ञा माने बिना उसमें मेरा विश्वास एक मरा हुआ विश्वास है। (याकूब २:२६)।

उद्धार पाने के लिये, अर्थात् अपने पापों से मुक्ति प्राप्त करके स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य बनने के लिये, प्रभु यीशु ने आज्ञा दी है कि प्रत्येक मनुष्य को उसमें विश्वास करना चाहिए और अपने पापों से मन फिराकर पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेना चाहिए। "जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा" यीशु ने कहा था, "उसी का उद्धार होगा।" (मरकुस १६:१६ ; प्रेरितों २:३८)। बपतिस्मा लेने का अर्थ है यीशु की मृत्यु की समानता में जल-रूपी-कब्र के भीतर उसके साथ गाड़े जाना और उसके जी उठने की समानता में जल की कब्र में से बाहर आना। (रोमियों ६:३-६ ; कुलुस्सियों २:१२)। क्या आप ने यीशु की आज्ञा को मानकर उसमें विश्वास किया है, क्या आपने अपना मन फिराया है, और बपतिस्मा लिया है? यही सवाल कुछ समय पूर्व जब मैंने एक नौजवान से किया था, तो उसने जवाब देकर कहा था, "हाँ, जब मैं छोटा था तो मेरे मां-बाप ने मेरा बपतिस्मा करवा दिया था।" परन्तु यह उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु की आज्ञा का पालन है या उसकी आज्ञा का उल्लंघन है? यह निश्चय ही उसकी आज्ञा का उल्लंघन है। क्योंकि उस ने विश्वास करनेवालों को स्वंय अपने पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये बपतिस्मा लेने की आज्ञा दी है, और वह भी बपतिस्मा लेने की, अर्थात् जल के भीतर गाड़े जाने

की, जल की बूंदे छिड़कवाने की नहीं। यदि आप वास्तव में प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करते हैं तो निश्चय ही आप अपना मन फिराकर उसकी आज्ञा को उसकी इच्छा के अनुसार मानेंगे।

बाइबल में लिखा है, कि यदि मुझे यहां तक पूरा विश्वास हो, कि मैं पहाड़ों को हटा दूं, परन्तु यदि मैं प्रेम न रखूं, तो मैं कुछ भी नहीं। (१ कुरिन्थियों १३:२)। और प्रभु यीशु ने अपने चेलों से कहा था कि "यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।" (यूहन्ना १४:१५)।

परमेश्वर अपने वचनानुसार चलने के लिये आपको सामथ दें।

नए जन्म के विषय में

अपने आज के पाठ में हम इस बात पर विचार करेंगे कि बाइबल नए जन्म के विषय में हमें क्या सिखाती है। जन्म का अभिप्राय आरम्भ से है। जब किसी का जन्म होता है तो वह उसके जीवन का आरम्भ होता है। और बाइबल हमें सिखाती है कि जिस प्रकार मनुष्य को शारीरिक रूप से जन्म लेना आवश्यक है, उसी तरह से प्रत्येक मनुष्य को आत्मिक जन्म की भी आवश्यकता है। क्योंकि प्रत्येक मनुष्य अपने पापों के कारण मरा हुआ है। और मरा हुआ होने के कारण वह जीवन से अलग है। क्योंकि मृत्यु का अर्थ है अलग होना। जिस प्रकार आत्मा का शरीर से सम्बन्ध टूट जाने पर हम मनुष्य को मरा हुआ कहते हैं। उसी प्रकार परम-आत्मा अर्थात् परमेश्वर से आत्मा का सम्बन्ध टूट जाने से मनुष्य आत्मिक रूप से मर जाता है। मनुष्य अपने पापों के कारण परमेश्वर से अलग है। क्योंकि परमेश्वर पवित्र है और मनुष्य पापी है, इसलिये न तो परमेश्वर मनुष्य की संगति में रह सकता है और न मनुष्य परमेश्वर की संगति में उस के साथ रह सकता है। परन्तु इस का अर्थ यह नहीं है कि मनुष्य जन्म से ही पापी है। जन्म से कोई मनुष्य पापी नहीं होता। प्रभु यीशु ने एक बार अपने चेलों से यूं कहा था, कि "मैं तुम से सच कहता हूं, यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो, तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे।" (मत्ती १८:३)। सो मनुष्य को परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिये या फिर से परमेश्वर की

संगति में आने के लिये मन फिराकर छोटे बालकों के समान बनने की आवश्यकता है। छोटे बच्चों में कोई पाप नहीं है, इसलिये उन्हें फिर से जन्म लेकर नया बनने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु जो लोग समझदार हैं, वे, जो बचपन की अवस्था से पार हो चुके हैं, और वे, जो परमेश्वर की दृष्टि में अपना लेखा देने के योग्य हैं, उन्हें फिर से जन्म लेने की आवश्यकता है, उन्हें फिर से नया बनने की आवश्यकता है। परन्तु यह नया जन्म क्या है ? मनुष्य किस तरह से फिर से जन्म ले सकता है ? इस सम्बन्ध में एक जगह बाइबल में हम इस प्रकार पढ़ते हैं :

"फरीसियों में से नीकुदेमुस नाम का एक मनुष्य था, जो यहूदियों का सरदार था। उस ने रात को यीशु के पास आकर उस से कहा हे रब्बी, हम जानते हैं, कि तू परमेश्वर की ओर से गुरू होकर आया है ; क्योंकि कोई इन चिन्हों को जिन्हें तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो, तो नहीं दिखा सकता। यीशु ने उसको उत्तर दिया ; कि मैं तुझ से सच-सच कहता हूं, यदि कोई नए सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता। नीकुदेमुस ने उस से कहा, मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो क्योंकर जन्म ले सकता है ? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी वार प्रवेश करके जन्म ले सकता है ? यीशु ने उत्तर दिया, कि मैं तुझ से सच-सच कहता हूं ; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्में तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। क्योंकि जो शरीर से जन्मा है वह शरीर है ; और जो आत्मा से जन्मा है वह आत्मा है। अचम्भा न कर, कि मैं ने तुझ से कहा ; कि तुम्हें नए सिरे से जन्म लेना अवश्य है। हवा जिधर चाहती है उधर चलती है, और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता, कि वह कहां से आती और किधर को जाती है : जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है।" (यूहन्ना ३:१-८)।

यहां, नए जन्म के सम्बन्ध में जिन बातों को प्रभु यीशु मसीह ने

सिखाया है, उन में सबसे पहिली बात यह है कि नया जन्म प्राप्त करना प्रत्येक मनुष्य के लिये आवश्यक है। "यदि कोई नए सिरे से न जन्मे," प्रभु यीशु ने कहा, "तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता", अर्थात् परमेश्वर के राज्य के योग्य बनने के लिये प्रत्येक मनुष्य को नए सिरे से जन्म लेना आवश्यक है। फिर हम देखते हैं कि यीशु ने नए सिरे से जन्में हुए मनुष्य की तुलना हवा से करके कहा, कि "हवा जिधर चाहती है उधर चलती है और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता, कि वह कहां से आती और किधर को जाती है : जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है।" अर्थात् आत्मिक जन्म हवा के समान है जिसे सुना तो जा सकता है परन्तु देखा नहीं जा सकता। वह शारीरिक जन्म के समान नहीं है। "जो शरीर से जन्मा है" यीशु ने कहा, "वह शरीर है ; और जो आत्मा से जन्मा है वह आत्मा है।" अर्थात्, नए सिरे से जन्म लेने की आवश्यकता मनुष्य के बाहरी व्यक्तित्व को नहीं है परन्तु उसके भीतरी व्यक्तित्व को है। "मनुष्य जब बूढ़ा हो गया" नीकुदेमुस ने यीशु से कहा, "तो क्योंकर जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश कर के जन्म ले सकता है ?" प्रभु यीशु ने कहा, नहीं, परन्तु नया जन्म आत्मिक जन्म है; मनुष्य के शरीर को नहीं परन्तु आत्मा को नया बनने की आवश्यकता है। परन्तु कैसे ? किस तरह से मनुष्य नए सिरे से जन्म ले सकता है? यीशु ने कहा कि "जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्में तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।" सो हम देखते हैं कि मनुष्य को जल और आत्मा से जन्म लेने की आवश्यकता है अब इस का अर्थ क्या है ?

इस सम्बन्ध में सबसे पहली बात तो हमें यह याद रखनी चाहिए कि यह मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह जल और आत्मा से जन्म ले। यीशु ने यह नहीं कहा था, कि जल और आत्मा तुम्हें जन्म देंगे, परन्तु उस ने कहा था कि जब तक मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे।

अर्थात् यह मनुष्य का कर्त्तव्य है, मनुष्य को जल और आत्मा से सम्पर्क कर के उन से जन्म लेना है । बाइबल स्पष्टता से हमें बताती है कि परमेश्वर के पवित्र आत्मा की प्रेरणा के द्वारा उसके वचन को उसकी पुस्तक में लिखा गया है । (१ पतरस १:१२; २ पतरस १:२१) । प्रभु यीशु ने अपने प्रेरित चेलों से यह प्रतिज्ञा की थी कि जब वह उनके ऊपर अपने पवित्रात्मा को भेजेगा तो आत्मा उन पर सारी सच्चाई को प्रकट करेगा । (यूहन्ना १६:१३) । और जब उन्होंने पवित्रात्मा को वास्तव में प्राप्त किया तो जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें सामर्थ दी वैसे ही उन्होंने उसके वचन को प्रकट किया (प्रेरितों २:१-४), अर्थात् उसका प्रचार किया और बाइबल की पुस्तकों में लिखा । इसलिए जब यीशु ने मनुष्य को आत्मा से जन्म लेने की आज्ञा दी, तो इसका अर्थ यह है कि मनुष्य को चाहिए कि वह आत्मा की प्रेरणा द्वारा लिखे गए उसके वचन को सुने और सुनकर उसे माने । हमें यह भी याद आता है, कि यीशु ने एक बार कहा था, कि "जो बातें मैंने तुम से कहीं हैं वे आत्मा हैं ।" (यूहन्ना ६:६३) । परमेश्वर का वचन, यीशु ने सिखाया था, उसके राज्य का बीज है । (लूका ८:११) । इसलिए जब वह बीज, पढ़ने या सुनने के द्वारा, मनुष्य के मन में बोया जाता है तो उस से जो फल उत्पन्न होता है वह आत्मिक जन्म होता है । इसी कारण एक जगह बाइबल में लिखा है, "उसने अपनी ही इच्छा से हमें सत्य के वचन के द्वारा उत्पन्न किया ।" (याकूब १:१८) । और फिर एक अन्य जगह हम इस प्रकार पढ़ते हैं : "क्योंकि तुमने नाशमान नहीं पर अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरनेवाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है... और यह वही सुसमाचार का वचन है जो तुम्हें सुनाया गया था ।" (१ पतरस १:२३,२५) । सो आत्मा से जन्म लेने का अर्थ है आत्मा की प्रेरणा से लिखी गई बातों को सुनकर उन्हें मानना । क्योंकि जब हम उन आज्ञाओं को मानते हैं जिन्हें पवित्र आत्मा की प्रेरणा से लिखा गया था तो ऐसा करके हम

पवित्र आत्मा की बात को मानते हैं और इस प्रकार उसके वचन के द्वारा हम नया जन्म प्राप्त करते हैं।

परन्तु इस से पहले कि हम यहीं रुक जाएं, हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि प्रभु यीशु ने कहा था, कि "जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे..." अर्थात् न केवल आत्मा से और न केवल जल से परन्तु जल और आत्मा दोनों से जन्म लेना आवश्यक है। प्रभु यीशु के चेलों ने जब उसके सुसमाचार का प्रचार सबसे पहिली बार किया था तो वह उन्होंने यरुशलेम नगर में किया था। बाइबल में हम पढ़ते हैं कि उस दिन यरुशलेम में एक त्योहार मनाया जा रहा था, और बड़ी-बड़ी दूर से वहाँ हज़ारों लोग आए हुए थे। तभी एकाएक प्रभु ने अपनी प्रतिज्ञानुसार अपने प्रेरितों को पवित्रात्मा से भर दिया और उसकी सामर्थ से वे उन्हीं लोगों की भाषाओं में उन्हें यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने का सुसमाचार सुनाने लगे। बाइबल में लिखा है कि जब उन लोगों ने यीशु की मृत्यु के सुसमाचार को सुना तो उनके मन छिद गए और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, कि अब हम क्या करें ? लिखा है कि तब प्रेरित पतरस ने उन से कहा, कि मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले। और हम पढ़ते हैं कि उस दिन तीन हज़ार लोगों ने बपतिस्मा लिया। (प्रेरितों २)। इस घटना के कई वर्ष पश्चात् प्रेरित पतरस एक जगह बाइबल में लिखकर उन्हीं लोगों से इस प्रकार कहता है, कि, "तुम ने नाशमान नहीं पर अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरनेवाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है।" (१ पतरस १:१,२३)। परन्तु किस प्रकार ? क्योंकि उन्होंने आत्मा द्वारा कहे गए वचन को सुनकर माना था। उन्होंने अपना-अपना मन फिराकर जल के भीतर बपतिस्मा लिया था। बपतिस्मा लेने का अर्थ है यीशु के अधिकार से पापों की क्षमा के लिये जल के भीतर गाड़े जाकर उसमें से बाहर आना।

(प्रेरितों २:३८ ; कुलुस्सियों ३:१७ ; २:१२) । जब फिलिप्पुस ने खोजे को बपतिस्मा दिया था तो बाइबल में लिखा है कि वे दोनों जल में उतर पड़े और फिलिप्पुस ने खोजे को बपतिस्मा दिया । (प्रेरितों ८:३५-३६) ।

सो अपने पाठ के अन्त में हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि नए सिरे से जन्म लेने का अर्थ है आत्मा की शिक्षा को ग्रहण करके प्रभु यीशु में विश्वास लाना और अपना मन फिराकर जल के भीतर अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेना ।

क्या आपने परमेश्वर के वचन की शिक्षानुसार नया जन्म प्राप्त किया है ? "यदि कोई नए सिरे से न जन्मे" प्रभु यीशु ने नीकुदेमुस से कहा था: "तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता ।"

विश्वास के विषय में

यदि आप बाइबल से परिचित हैं। तो आप इस बात से भी अवश्य ही परिचित होंगे कि बाइबल विश्वास की एक पुस्तक है। क्योंकि आरम्भ से लेकर अन्त तक जो कुछ भी इस पुस्तक में हम पढ़ते हैं उसका सम्बन्ध विश्वास से है। विश्वास वास्तव में एक बड़ा ही विशाल सिद्धांत है। हमारा सम्पूर्ण जीवन ही विश्वास पर आधारित है। जो कुछ हम खाते हैं उसे विश्वास से खाते हैं। जब हम रेल या बस या किसी भी गाड़ी में बैठकर यात्रा करते हैं तो हम विश्वास से करते हैं। जब बीमार पड़ने पर हम दवाई लेते हैं तो उसे भी विश्वास से लेते हैं। यानि जो कुछ भी हम जीवन में करते हैं वह सब हम विश्वास से ही करते हैं। परन्तु हमारा विश्वास कुछ कारणों पर आधारित होता है। हम सड़ी-गली वस्तुएं खाकर स्वस्थ रहने पर विश्वास नहीं करते ; हम गलत रेल या बस में बैठकर अपने स्थान पर पहुंचने का विश्वास नहीं रखते ; हम दवाई के स्थान पर ज़हर खाकर या गलत दवाई खाकर चंगे होने पर विश्वास नहीं रखते। मेरे कहने का अर्थ यह हैकि हमारा विश्वास कुछ उचित कारणों पर आधारित रहता है। जब हम किसी घर को देखते हैं या एक सुन्दर चित्र को देखते हैं तो हम यह विश्वास करते हैं कि उसे किसी ने बनाया है। बाइबल कहतीं है कि आकाश और पृथ्वी और सारे जगत की सृष्टि परमेश्वर ने की है। और हम इस बात पर विश्वास करते हैं। क्यों ? क्योंकि हम आकाश और पृथ्वी और सारे जगत को देखते हैं। इस बात पर

हम केवल इस लिए विश्वास नहीं करते कि बाइबल में ऐसा लिखा है परन्तु हम इसलिए विश्वास करते हैं क्योंकि इस बात का प्रमाण हमारे सामने है।

यही बात हम प्रभु यीशु मसीह के विषय में भी देखते हैं। हम क्यों उसमें विश्वास करते हैं कि वह परमेश्वर का पुत्र है ? क्यों हम उसमें विश्वास करते हैं कि वह सामर्थपूर्ण है ? क्यों हम इस बात में विश्वास करते हैं कि वह हमारा मुक्तिदाता है ? क्यों हम उसके दावों में और उसकी प्रतिज्ञाओं में विश्वास करते हैं ? क्या केवल इसलिये कि ये बातें बाइबल में लिखी हैं ? नहीं। परन्तु इन सब बातों पर हमारा विश्वास इसलिये है क्योंकि उनके कारण हमारे सामने हैं। बाइबल कहती है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। क्योंकि वह एक स्त्री के द्वारा परमेश्वर की सामर्थ से उत्पन्न हुआ था। और इस बात का प्रमाण बाइबल यह कहकर देती है कि वह मुर्दों में से जी उठने के कारण परमेश्वर का पुत्र ठहरा है। (रोमियों १:४)। अब इस बात पर हम क्यों विश्वास करते हैं ? क्या केवल इसलिये क्योंकि यह बात बाइबल में लिखी हुई है ? नहीं ! परन्तु इस बात में हम इसलिये विश्वास करते हैं क्योंकि यीशु सचमुच में मुर्दों में से जी उठा था। किन्तु, यह हम कैसे जानते हैं ? इस बात पर हम इसलिये विश्वास करतें हैं, क्योंकि जिन लोगों ने उसे उसकी मृत्यु से पहिले और मृत्यु के बाद देखा था ; जिन लोगों ने उसे क्रूस के ऊपर मरते देखा था, और कब्र के भीतर गाड़े जाते देखा था, और तीन दिन के बाद फिर से जीवित देखा था, उन्हीं लोगों ने इस बात की गवाही दी है। इस ऐतिहासिक सच्चाई को उन्होंने स्वयं अपने हाथों से बाइबल के नए नियम की पुस्तकों में लिखा था। क्या उनकी गवाही झूठी थी? यीशु के जी उठने की गवाही देने के कारण उन्हों ने अपनी जानों को कुर्बान कर दिया था। क्या कोई झूठी गवाही अपनी जान को बचाने के लिये देता है या खोने के लिये देता है ? क्यों हम बाबर, हिमायूं और अकबर के बारे में जानते हैं ? क्या हम में से किसी ने उन्हें कभी देखा था ?

इतिहास उनके होने की गवाही देता है, और इतिहास हमें बताता है, कि उन्होंने पृथ्वी पर क्या-क्या किया था।

सो जिन लोगों नें यीशु के बड़े-बड़े सामर्थपूर्ण कामों को देखा था, उन्हीं की गवाही हम बाइबल के नए नियम में पढ़ते हैं। वे लिखकर कहते हैं, कि "जिसे हम ने सुना, और जिसे अपनी आंखों से देखा; और हाथों से छुआ···जो कुछ हम ने देखा और सुना है उसका समाचार तुम्हें भी देते हैं·····" (१ यूहन्ना १:१, ३)। यीशु ने अपने चेलों के सामने अनेकों सामर्थपूर्ण काम किए थे; उन्हीं कामों को देखकर उन्हों ने उस पर विश्वास किया था। यूहन्ना नाम का यीशु का एक चेला अपनी पुस्तक में लिखकर कहता है, कि, "यीशु ने और भी बहुत चिन्ह चेलों के सामने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए। परन्तु," जो लिखे गए हैं, "ये इसलिए लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है: और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।" (यूहन्ना २०:३०,३१)। यही बात हम यीशु के दावों के सम्बन्ध में भी देखते हैं। उसने दावा किया था कि अपनी मृत्यु के तीन दिन बाद मैं जी उठूंगा, और वह सचमुच में जी उठा। उसने प्रतिज्ञा की थी कि अपनी मृत्यु के बाद जी उठकर मैं अपनी कलीसिया को बनाऊंगा और, उसने वास्तव में ऐसा ही किया। (यूहन्ना २:१९-२२; मत्ती १६:१८; प्रेरितों २:४७)। सो यीशु में हमारा विश्वास केवल इसलिए नहीं है कि उसके बारे में हम केवल बाइबल में पढ़ते हैं, परन्तु उसमें हमारे विश्वास के कुछ बड़े ही ठोस प्रमाण और कारण हैं।

नीकुदेमुस से बातें करते हुए यीशु ने उस से कहा था कि "जिस रीति से मूसा ने जंगल में सांप को ऊंचे पर चढ़ाया था उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊंचे पर चढ़ाया जाए। ताकि जो कोई विश्वास करे उसमें अनन्त जीवन पाए। क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि

जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३:१४-१६)। नीकुदेमुस एक यहूदी था। वह बाइबल के पुराने नियम से मूसा के बारे में जानता था, उसने मूसा के बारे में पढ़ा था, कि जब वह परमेश्वर की आज्ञा से लोगों को परमेश्वर द्वारा बताए एक स्थान पर ले जा रहा था तो मार्ग की कठिनता के कारण लोग परमेश्वर के विरुद्ध बातें करने लगे थे, और उन्हें दन्ड देने के लिए परमेश्वर ने उनके बीच ज़हरीले सांपों को भेजा था जो आकर उन्हें डसने लगे थे। और तब लोगों ने मूसा से कहा था, कि हमें बचाने के लिये परमेश्वर से बिनती कर। इस पर परमेश्वर ने मूसा से कहा था, कि पीतल का एक सांप बनाकर उसे ऊंचे पर लटका और जितने लोग सांपों से डसे गए थे उन्हें आज्ञा दे कि वह पीतल के साँप की ओर देखें तब वे बच जाएंगे। और वास्तव में ऐसा ही हुआ, कि ज़ितने सांपों से डसे हुए लोगों ने पीतल के बने साँप की और देखा वे सब बच गए। (गिनती २१)। यीशु ने नीकुदेमुस से कहा था, कि ऐसे ही वह भी ऊंचे पर अर्थात् क्रूस पर चढ़ाया जायगा और जो उसमें विश्वास करेगा वह अनन्त जीवन पाएगा। "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा" यीशु ने कहा था, "कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।"

यीशु परमेश्वर का पुत्र था। वह जानता था कि वह जो कह रहा है वह सच है। उसने कहा था, कि परमेश्वर ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया। बाइबल कहती है कि यीशु क्रूस के ऊपर सारे जगत के पापों का प्रायश्चित करने के लिए मरा था। (१ यूहन्ना २:२; ४:१०)। क्योंकि परमेश्वर प्रत्येक मनुष्य से प्रेम करता है और प्रत्येक का उद्धार करना चाहता है। वह जानता है कि प्रत्येक मनुष्य अपने पापों के कारण उस से अलग है। परन्तु वह मनुष्य को अपनी संगति में लाना चाहता है। इसलिए यीशु को जगत के पापों का प्रायश्चित ठहराकर

परमेश्वर ने मनुष्य को एक मार्ग दिया है कि यीशु के द्वारा मनुष्य उस के साथ अपना मेल कर ले। इसीलिए यीशु ने कहा था कि जो कोई विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए। सो अनन्त जीवन पाने के लिये हमें चाहिए कि हम यीशु पर विश्वास करें। परन्तु यीशु पर विश्वास करने का अर्थ क्या है ?

बाइबल में हम दो प्रकार के विश्वासों के बारे में पढ़ते हैं, अर्थात् एक विश्वास वह है जो ज़िन्दा है, और दूसरा विश्वास वह है जो मरा हुआ है। बाइबल कहती है कि "कार्य के बिना विश्वास व्यर्थ है" क्योंकि, "मनुष्य केवल विश्वास से नहीं वरन कर्मों से धर्मी ठहराया जाता है।" और "जैसे शरीर आत्मा के बिना मृतक है, ठीक वैसे ही विश्वास भी कार्य के बिना मृतक है।" (याकूब २:२०, २४, २६)। एक मरा हुआ विश्वास व्यर्थ है, वह कुछ नहीं कर सकता, वह किसी को नहीं बचा सकता। और यदि विश्वास में कोई काम नही है तो वह मरा हुआ है। और एक ज़िन्दा विश्वास ऐसा विश्वास है जो न केवल मनुष्य के मन में ही रहता हैं परन्तु वह कामों के द्वारा अपने आपको प्रकट करता है। "जब तुम मेरा कहना नहीं मानते" प्रभु यीशु ने कहा था, "तो क्यों मुझे हे प्रभु, हे प्रभु कहते हो ?" (लूका ६:४६)। क्या आप यीशु में विश्वास करते है ? क्या आप उसे जगत का उद्धारकर्त्ता मानते है? यीशु ने अपने चेलों से कहा था कि मेरी मृत्यु और जी उठने के सुसमाचार को जगत में सब लोगों को जाकर सुनाओ, और जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा। (मरकुस १६:१५, १६; मत्ती २८:१९:२०)। क्या आप यीशु में विश्वास करते हैं ? क्या आपने उसकी आज्ञा को मानकर बपतिस्मा लिया है? क्या आप प्रति दिन उस की शिक्षानुसार अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं ? विश्वास एक बहुत बड़ा सिद्धांत है, विश्वास मनुष्य की एक बहुत बड़ी आवश्यकता है। परन्तु यदि विश्वास कार्य के बिना है तो वह व्यर्थ हैं, और मरा हुआ है।

आशा के विषय में

बाइबल में एक बड़ी ही महत्वपूर्ण सच्चाई हमें यह मिलती है कि मनुष्य अमर है। इसके विपरीत पृथ्वी पर अनेक लोगों का यह विश्वास है कि मृत्यु मनुष्य का अन्त है। मृत्यु के बाद उन्हें कोई आशा नहीं है। उनकी आशा केवल इस जीवन तक ही सीमित है। सो उनके विचार में मनुष्य के लिए खाना-पीना और जो जी में आए करना ही सब कुछ है, क्योंकि मनुष्य जब मर जाएगा तो वे कहते हैं उसका अस्तित्व हमेशा के लिये मिट जाएगा। परन्तु अभी कुछ ही समय पूर्व एक मनुष्य को मैंने यह भी कहते सुना था, कि मृत्यु के बाद जीवन तो है। किन्तु वह जीवन कैसा होगा इसके विषय में कुछ नहीं कहा जा सकता उनका कहना यह था कि मैं चुहे को मारूंगा तो अगले जीवन में मैं चुहा बनुंगा और यदि मैं कुत्ते को मारूंगा तो आनेवाले जीवन में मैं एक कुत्ता बनूंगा। अब यहां इस विचार में एक आशा तो अवश्य है परन्तु कौन मनुष्य एक चूहा या कुत्ता या बिल्ली बनने की आशा से प्रसन्न हो सकता है? या कौन मनुष्य चाहेगा कि आनेवाले जीवन में वह एक पशु बनकर पृथ्वी पर आए? और यदि यह विचार सहा है कि मनुष्य वर्तमान जीवन में जिसे मारेगा उसी के रूप में वह पृथ्वी पर फिर आएगा तब तो मनुष्य को ही मारना उत्तम होगा, क्योंकि, इस सिद्धांत के अनुसार मनुष्य को मारनेवाला फिर से मनुष्य बन कर पृथ्वी पर जन्म लेगा। और कौन नहीं चाहेगा कि आनेवाले जीवन में वह फिर से एक मनुष्य बने?

परन्तु क्या आप जानते है कि इस विषय में बाइबल हमें क्या सिखाती है ?

सबसे पहिली बात इस सम्बन्ध में हम यह देखते हैं, कि बाइबल में मनुष्य की मृत्यु को अस्तित्व का मिट जाना कहकर सम्बोधित नहीं किया गया है। परन्तु बाइबल कहती है कि मृत्यु के द्वारा मनुष्य अलग हो जाता है। एक जगह विश्वास को सम्बोधित करके बाइबल का लेखक इस प्रकार कहता है, कि जैसे देह आत्मा के बिना मरी हुई है वैसे ही विश्वास भी कामों के बिना मरा हुआ है। (याकूब २:२६)। सो मृत्यु का अर्थ है आत्मा का देह से अलग हो जाना। फिर एक जगह बाइबल में हम इस प्रकार पढ़ते हैं. कि मृत्यु के समय मिट्टी अर्थात् देह मिट्टी में मिल जाएगी परन्तु आत्मा परमेश्वर के पास लौट जाएगी। (सभोपदेशक १२:७)। इस प्रकार, बाइबल के द्वारा हम यह सीखते हैं कि मनुष्य का स्वभाव वास्तव में दोहरा है, यानि वह केवल देह या शरीर ही नहीं है परन्तु वह आत्मा भी है। वास्तविक मनुष्य सच्चाई में वह है जो मनुष्य के भीतर है ; जिसे मनुष्य ने अपनी सृष्टि के समय परमेश्वर से प्राप्त किया था। बाइबल के कथनानुसार परमेश्वर ने आरम्भ में आदम की देह को मिट्टी से बनाकर उसके भीतर अपने जीवन का स्वास डाला था। (उत्पत्ति २:७)। इसीलिये बाइबल कहती है कि मनुष्य की मृत्यु के समय मिट्टी तो मिट्टी में मिल जाएगी और आत्मा परमेश्वर के पास लौट जाएगी। जब यीशु जगत में था तो उसने कहा था, नाशमान भोजन के लिये परिश्रम न करो परन्तु उस भोजन के लिये करो जो अनन्त जीवन तक ठहरता है। (यूहन्ना ६:२७)। नाशमान वह वस्तु है जिसका नाश हो जाएगा परन्तु अनन्त वह वस्तु है जिसका कभी अन्त नहीं होगा। मनुष्य की देह नाशमान है परन्तु उसकी आत्मा अमर है अर्थात् उसकी आत्मा का अस्तित्व कभी नहीं मिटेगा। मृत्यु के द्वारा आत्मा देह से अलग हो जाती है। परन्तु अलग होकर विद्यमान रहती है। जो वस्तु मिट्टी में मिल जाती है वह मनुष्य

की देह है । आत्मा के विषय में बाइबल बताती है कि वह देह से अलग होकर न केवल विद्यमान ही रहती है परन्तु उसे सब कुछ स्मरण भी रहता है। (लूका १६) ।

जब यीशु इस जगत में आया था, तो अपने आनेवाले बलिदान को सम्बोधित करके उसने कहा था, कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास लाए वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए। (यूहन्ना ३:१६) । यीशु जगत में मनुष्य के शरीर का नाश होने से बचाने के लिये नहीं आया था, परन्तु वह मनुष्य की आत्मा को बचाने के लिये आया था । क्योंकि शरीर को नाश होने से कोई नहीं बचा सकता । बाइबल कहती है कि परमेश्वर ने प्रत्येक मनुष्य के लिये एक बार मरना नियुक्त किया है। (इब्रानियों ९:२७) । प्रभु यीशु ने यह भी कहा था कि "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा ? और मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा ?" (मरकुस ८:३६, ३७) । यहां प्राण का तात्पर्य आत्मा से है, जो जगत की सारी वस्तुओं से अधिक मूल्यवान है ; और इस का कारण यह है कि प्राण या आत्मा जो मनुष्य के भीतर है वह उसे परमेश्वर से मिला है। परन्तु मनुष्य अपने प्राण की हानि किस प्रकार उठा सकता है ? पाप में रहकर । जब आदम ने परमेश्वर की आज्ञा के विरोध में चलकर पाप किया था तो वह परमेश्वर की पवित्र संगति से अलग हो गया था और इस प्रकार उसने अपने प्राण की हानि उठाई थी । वास्तव में बाइबल कहती है, कि आदम उस दिन मर गया था, क्योंकि परमेश्वर के साथ उसका आत्मिक सम्बन्ध टूट गया था। परन्तु बाइबल कहती है, कि इसी प्रकार पृथ्वी पर प्रयेत्क मनुष्य का सम्बन्ध पाप के कारण परमेश्वर से टूटा हुआ है। सो वास्तव में देखा जाए तो मनुष्य आशा-रहित है। क्योंकि पाप के कारण उसका सम्बन्ध परमेश्वर के साथ नहीं है । और जब वह देह से अलग होकर इस जगत से चला

जाएगा तो वह हमेशा परमेश्वर से अलग रहेगा ।

सो यीशु इस जगत में मनुष्य के लिये एक आशा का सुसमाचार लेकर आया था। उस ने कहा था, कि परमेश्वर ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उसमें विश्वास करे वह नाश न हो, अर्थात् परमेश्वर से अलग न रहे, परन्तु अनन्त जीवन पाए, यानि उसकी संगति में वापस आ जाए। क्रूस के ऊपर यीशु की मृत्यु परमेश्वर की ही इच्छा से हुई थी। परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को सारे जगत के पापों का प्रायश्चित करने के लिये क्रूस के ऊपर बलिदान कर दिया था। यीशु की क्रूस के ऊपर मृत्यु कोई घटना मात्र नहीं थी, परन्तु वह परमेश्वर की पूर्व योजना के अनुसार थी। बाइबल की पुस्तकों में सैकड़ों वर्ष पहिले यीशु के जगत में आने और उसकी मृत्यु के बारे में लिखा जा चुका था। और जब वह वास्तव में क्रूस के ऊपर मर गया और अपनी मृत्यु पश्चात् जी उठकर उसने यह हमेशा के लिये प्रमाणित कर दिया कि सचमुच में वह परमेश्वर का पुत्र है ; और जब वह स्वर्ग में ऊपर वापस उठा लिया गया। तो उसके इस सुसमाचार का प्रचार सारे जगत में किया गया। और उसके नए नियम की पुस्तकों में हमारी आशा के लिये यह लिखा गया कि हम परमेश्वर के "अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है सेंत-मेत धर्मी ठहराए जाते हैं। उसे परमेश्वर ने उसके लोहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया है जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है....." (रोमियों ३:२४,२५)। क्योंकि पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का बरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।" (रोमियों ६:२३)। "सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है.....और सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिस ने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल-मिलाप कर लिया.....अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाप कर लिया और उन के अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया।" क्योंकि यीशु "जो पाप से अज्ञात था, उसी को

उसने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।" (२ कुरिन्थियों ५:१७-२१)।

जब प्रेरित पौलुस ने जान लिया था कि उसकी मृत्यु का समय निकट आ गया है तो उसने अपनी पत्री में तीमुथियुस को लिखकर यह कहा था : "मेरे कूच का समय आ पहुंचा है। मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं, मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैंने विश्वास की रखवाली की है। भविष्य में मेरे लिये धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है जिसे प्रभु, जो धर्मी और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा, और मुझे ही नहीं बरन उन सब को भी जो उसके प्रकट होने को प्रिय जानते हैं।" (२ तीमुथियुस ४:६-८)।

प्रेरित पौलुस की आशा कितनी अद्भुत तथा कितनी महान् थी! वह मृत्यु को अन्त नहीं परन्तु आरम्भ कहता है। सो वह कहता है, कि अब मेरे कूच का समय आ पहुंचा है। क्योंकि वह जानता था कि मृत्यु एक ऐसा साधन है जिस के द्वारा वह अपनी देह से अलग होकर उस अनन्त काल में प्रवेश करेगा जहां वह हमेशा के लिये रहेगा, और वहां, वह कहता है, मुझे जीवन का एक मुकुट मिलेगा। क्यों? क्योंकि मैंने विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़ी है अर्थात् मैंने शैतान का मुकाबला किया है; और मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है और विश्वास की रखवाली की है। बाइबल में पौलुस के बारे में हम पढ़ते हैं कि जिस दिन उसने प्रभु यीशु में विश्वास किया था और उसकी आज्ञानुसार अपने पापों को धो डालने के लिये बपतिस्मा लिया था, (प्रेरितों ९:१८; २२:१६), उसी दिन से उस ने अपना सारा जीवन यीशु को सौंप दिया था। क्योंकि वह आशा के साथ जीना चाहता था और आशा के साथ मरना चाहता था।

किन्तु वह कहता है कि धर्म का वह मुकुट जो प्रभु मुझे देगा, वह केवल मुझे ही नहीं मिलेगा परन्तु उन सब को भी मिलेगा जो मेरी ही तरह उसके प्रकट होने की बाट जोहते हैं। सो आज आपकी क्या आशा

है ? क्या आप ऐसी आशा रखते हैं कि आप फिर से किसी रूप में पृथ्वी के ऊपर जन्म लेंगे ? या क्या आप को कोई आशा नहीं है ? पौलुस के जीवन को अपनाईए, उसकी तरह प्रभु कीं आज्ञा मानकर अपने आप को उसे सौंप दीजिए । वह आप के आशाहीन जीवन को एक आशा-पूर्ण जीवन मे बदल देगा । "हे सब परिश्रम करने वालो और बोझ से दबे हुए लोगो," प्रभु यीशु कहता है, "मेरे पास आओ ; में तुम्हें विश्राम दूंगा ।" (मत्ती ११:२८) ।

परमेश्वर उसके पास आने में आप की सहायता करे ।

आराधना के विषय में

सबसे पहिले आज मैं आप को एक दोहा सुनाना चाहता हूं, जिसे कई वर्ष पूर्व मैं ने अपने स्कूल की किताब में पढ़ा था। दोहा इस प्रकार है: "कंकर पत्थर चुनि के मस्जिद लेई बनाए, ता चढ़ि मुल्ला बांग देई क्या बहिरा हुआ खुदाय।" आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व जब प्रेरित पौलुस अथेने में गया था तो वहां के लोगों से उसने इस प्रकार कहा था, कि, "मैं देखता हूं कि तुम हर बात में देवताओं के बड़े मानने वाले हो। क्योंकि मैं फिरते हुंए तुम्हारी पूजने की वस्तुओं को देख रहा था, तो एक ऐसी वेदी भी पाई, जिस पर लिखा था, कि "अनजाने ईश्वर के लिये"। सो जिसे तुम बिना जाने पूजते हो, मैं तुम्हें उसका समाचार सुनाता हूं। जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को बनाया है, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता। न किसी वस्तु का प्रयोजन रखकर मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है, क्योंकि वह तो आप ही सब को जीवन और स्वास और सब कुछ देता है।" (प्रेरितों १७:२२-२५)।

मनुष्य के मन में परमेश्वर का ज्ञान है, वह सृष्टि को देख कर जानता है कि उसका एक सृष्टिकर्त्ता है, वह उसकी आराधना करना चाहता है। आराधना करने का यह स्वभाव मनुष्य के भीतर स्वयं परमेश्वर ने उत्पन्न किया है। क्योंकि मनुष्य परमेश्वर की सृष्टि है, और उसने मनुष्य को अपनी आत्मिक समानता तथा स्वरूप पर बनाया है। परमेश्वर चाहता है कि मनुष्य उसकी उपासना करे। बाइबल में एक जगह हम इस प्रकार पढ़ते हैं: "परमेश्वर का

क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रकट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं। इसलिये कि परमेश्वर के विषय का ज्ञान उन के मनों में प्रकट है, क्योंकि परमेश्वर नेउन पर प्रकट किया है क्योंकि उसके अनदेखे गुण अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहां तक कि वे निरुत्तर है।" परन्तु "परमेश्वर को जानने पर भी उन्होंने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया, परन्तु व्यर्थ विचार करने लगे, यहां तक कि उन का निर्बुद्धि मन अन्धेरा हो गया। वे अपने आप को बुद्धिमान जताकर मूर्ख बन गए। और अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशमान मनुष्य, और पक्षियों, और चौपायों, और रेंगनेवाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला।" (रोमियों १:१८-२३)।

सो इन सब बातों से हम यह देखते हैं कि मनुष्यों ने परमेश्वर को कितना अधिक बदल डाला है। वह जो सर्वशक्तिमान् और सर्वव्यापी और सर्वज्ञानी, हैं और जो परम-आत्मा है उसे मनुष्य ने सृष्टि की प्रत्येक नाशमान् वस्तु में ढाल दिया है। और न केवल यही परन्तु उसके रहने के लिये लोगों ने कंकर-पत्थर चुनकर घर भी बनवा लिये हैं। वह जो आत्मा है उसे लोग पृथ्वी की वस्तुएं भेंट चढ़ाते हैं। अर्थात् परमेश्वर तथा उसकी उपासना की धारणा को लोगों ने पूर्ण रूप से बदल डाला है।

बाइबल में परमेश्वर ने न केवल अपने आपको ही प्रकट किया है, परन्तु उसने अपनी पुस्तक में इस बात को भी प्रकट किया है कि आज वह मनुष्य से किस प्रकार कि आराधना की इच्छा रखता है। किन्तु जबकि परमेश्वर की उपासना करने की उमंग तो मनुष्य के भीतर है, दूसरी ओर, उसके वचन की सच्चाई से अज्ञात रहकर वह परमेश्वर की उपासना उसकी इच्छानुसार नहीं कर रहा है। प्रभु यीशु जिस समय पृथ्वी पर मनुष्य को परमेश्वर का ज्ञान देने आया था, उसने

कहा था, कि परमेश्वर क्योंकि आत्मा है इसलिये हमें उसकी आराधना आत्मा तथा सच्चाई के साथ करनी चाहिए। (यूहन्ना ४:२४)। फिर यीशु ने यशायाह भविष्यद्वक्ता की कही बात को याद दिलाकर कहा था कि "यशायाह ने तुम्हारे विषय में यह भविष्यद्वाणी ठीक की थी। कि ये लोग होंठो से तो मेरा आदर करते हैं पर उनका मन मुझ से दूर रहता है। और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।" (मत्ती १५:८,९) ये शब्द मेरे नहीं हैं परन्तु उस प्रभु यीशु मसीह के शब्द हैं जो पृथ्वी पर स्वर्ग से आया था, जो परमेश्वर के पास से पृथ्वी पर आया था, और उसके कथनानुसार जो लोग मनुष्यों की विधियों को या मनुष्यों की शिक्षाओं को धर्मोपदेश अथवा धर्म-सिद्धांत करके मानते या सिखाते हैं वे परमेश्वर की आराधना व्यर्थ में करते हैं। क्या आपने सुना ? क्या आप परमेश्वर की उपासना करते हैं ? क्या आप जानते हैं कि आपकी उपासना वास्तव में परमेश्वर के वचन की सच्चाई पर आधारित है ? यदि नहीं, तो आपकी उपासना व्यर्थ है क्योंकि वह मनुष्यों के ठहराए नियमों तथा सिद्धांतों पर आधारित है।

आत्मा तथा सच्चाई से परमेश्वर की आराधना करने का अर्थ है मन की सीधाई तथा परमेश्वर के वचन की सच्चाई के अनुसार उसकी आराधना करना। परमेश्वर ने हमें बताया है अपने बचन की पुस्तक में कि आज हमें उस की उपासना किस तरह से करनी चाहिए। परन्तु इसके विपरीत लोगों ने उसकी उपासना करने की अनेक विधियाँ बना ली हैं। विभिन्न कलीसियाओं में आराधना करने का अपना-अपना निराला ढंग है। परमेश्वर के वचन की सच्चाई के विपरीत लोग उसकी उपासना मनुष्यों द्वारा लिखी गई किताबों से पढ़-पढ़कर करते हैं। प्रेरित पौलुस कहता है, कि परमेश्वर मनुष्य के हाथों के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता है और न किसी वस्तु का प्रयोजन रखकर मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है। परन्तु लोग उपासना के स्थान को पवित्र-

स्थान कहते हैं, क्योंकि वे सोचते हैं कि उस स्थान में परमेश्वर रहता है। कुछ लोग उसे गिरजा-घर कहते हैं, अर्थात एक ऐसा घर जहां मनुष्य को सिजदे में गिर जाना चाहिए। कुछ लोग उस स्थान को खुदा का घर कहते हैं, यानि एक ऐसा घर जिसमें परमेश्वर रहता है। परन्तु बाइबल के अनुसार, परमेश्वर मनुष्यों के हाथों के बनाए हुए घरों में नहीं रहता, क्योंकि जो वास्तव में परमेश्वर है वह आत्मा है, जिसे किसी एक स्थान पर नहीं रखा जा सकता। अर्थात्, परमेश्वर की आराधना सब जगह की जा सकती है, जहां कहीं भी उसके लोग एकत्रित हो वहीं पर वे उसकी आराधना कर सकते हैं क्योंकि पृथ्वी पर उसका कोई घर नहीं है, और न उसे कंकड़-पत्थर के बने हुए किसी घर की आवश्यता है। क्योंकि वह परम-आत्मा है।

प्रेरित पौलुस कहता है कि वह किसी वस्तु का प्रयोजन रखकर मनुष्य के हाथों की सेवा नहीं लेता है। कुछ लोग परमेश्वर की आराधना में पृथ्वी पर की वस्तुओं की भेंट चढ़ाते हैं। परन्तु परमेश्वर को उन वस्तुओं का प्रयोजन नहीं है। कुछ अन्य लोग आराधना के समय लोबान, अगरबत्ती जैसी सुगन्धित वस्तुओ को जलाते हैं। सुगन्धित वस्तुओं तथा मोमबत्तियों की आवश्यकता परमेश्वर को नहीं पर मनुष्य को है। परमेश्वर को ऐसी वस्तुओं का प्रयोजन नहीं है। परन्तु, जैसे कि अभी बाइबल में से हमने पढ़ा था कि लोगों ने अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशमान् मनुष्यों की समानता में बदल डाला है, इसलिये बहुतेरे लोग परमेश्वर को मनुष्य समझकर उसकी आराधना करते हैं। फिर, अधिकाँश लोग परमेश्वर की आराधना भिन्न-भिन्न बाजों को बजाकर करते हैं। अपने हाथों से लोग बाजों को बनाते है और फिर उनकी धुनें परमेश्वर को बजा-बजाकर सुनाते हैं। क्या परमेश्वर को मनुष्यों की तरह बाजों की आवश्यकता है ? क्या वह चाहता है कि लकड़ी, पीतल और लोहे इत्यादि के बने हुए बाजे उसकी उपासना करें? उसे मनुष्यों के हाथों की बनी वस्तुओं की सेवा की आवश्यकता नहीं

है, परन्तु उसे स्वयं मनुष्य की सेवा की आवश्यकता है। वह यह नहीं चाहता है कि मनुष्य अपने हाथों से बाजों को बनाकर उन बाजों के द्वारा उसकी प्रशंसा करे, परन्तु यह चाहता है कि स्वयं मनुष्य अपने गलों से गाकर उसकी प्रशंसा करे। (इफिसियों ५:१९, आमोस ५:२३ ; ६:५)।

सो यदि आज हमारी उपासना परमेश्वर के वचन के अनुसार नहीं है तो वह उपासना व्यर्थ है। हम परमेश्वर की सच्ची आराधना मनुष्यों की शिक्षाओं तथा विधियों के अनुसार नहीं कर सकते। यदि हमारी आराधना परमेश्वर के वचन की शिक्षा के अनुसार नहीं है तो परमेश्वर उसे स्वीकार नहीं करेगा। बाइबल के नए नियम में हमें कुछ ऐसे उदाहरण मिलते हैं जिनसे हमें यह शिक्षा मिलती है कि आज परमेश्वर की आराधना हमें किस प्रकार करनी चाहिये। जब आरम्भ में लोगों ने अपना-अपना मन फिराकर अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लिया था, तो उनके विषय में लिखा है, कि वे परमेश्वर के वचन की बातों को सीखने में और प्रभु-भोज लेने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे। (प्रेरितों २ : ३८,४१,४२)। फिर एक अन्य जगह हम यूं पढ़ते हैं कि प्रभु के अनुयायी सप्ताह के पहिले दिन प्रभु-भोज लेने के लिये एकत्रित हुए और प्रेरित पौलुस ने उन्हें प्रभु के वचन की शिक्षा दी। (प्रेरितों २०:७)। इसी प्रकार पौलुस एक स्थाह पर प्रभु के अनुयायीयों से कहता है, कि सप्ताह के पहिले दिन तुम में से हर एक अपनी अपनी आमदनी के अनुसार प्रभु के कार्य के लिये चन्दा दिया करे। सो इन बातों से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि प्रभु के अनुयायीयों को प्रत्येक सप्ताह के पहिले दिन किसी भी स्थान पर उसकी आराधना के लिये एकत्रित होना चाहिए। सप्ताह के पहिले दिन इसलिये क्योंकि उस दिन जगत का उद्धारकर्त्ता मुर्दों में से जी उठा था। और इस दिन एकत्रित होकर उन्हें प्रभु के बलिदान को स्मरण करने के लिये उसके भोज में सम्मिलित होना चाहिए, गीत

गाकर उसकी प्रशंसा करनी चाहिए, सब लोगों तथा आवश्यक्ताओं के लिये परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए ; और उसके वचन में लिखी बातों को सुनना चाहिए ; और सुसमाचार प्रचार तथा आवश्यकताओं से पीड़ितों की सहायता के लिये अपनी आमदनी के अनुसार दान देना चाहिए। परमेश्वर की आराधना का यह नमुना हमें स्वयं परमेश्वर ने अपने वचन की पुस्तक में दिया है। यदि वास्तव में हम परमेश्वर की आराधना आत्मा और सच्चाई से करना चाहते हैं, तो हमें चाहिये कि उन सब विधियों, शिक्षाओं तथा धर्म-उपदेशों पर चलना छोड़कर जिन्हें मनुष्यों ने बनाया है हम उसकी आराधना उसके वचन में लिखी बातों के अनुसार करें। हमारी उपासना केवल तभी सच्ची ठहरेगी और केवल तभी परमेश्वर को स्वीकार होगी जब वह उसके वचन के अनुसार होगी।

प्रभु अपने वचन पर चलने के लिये आपको सामर्थ दे।

प्रार्थना के विषय में

प्रभु यीशु मसीह के जीवन से एक बड़ी ही महत्वपूर्ण बात हम यह सीखते हैं कि उसके जीवन में प्रार्थना का एक बहुत ही बड़ा स्थान था। बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी उसने अपने आपको परमेश्वर के तुल्य या समान होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। (फिलिप्पियों २:६)। जब उसने स्वर्ग में परमेश्वर को छोड़कर पृथ्वी पर आकर एक मनुष्य के रूप को धारण किया तो एक आज्ञाकारी पुत्र की नाई वह परमेश्वर के वश में हो गया। इसीलिये बाइबल उसके सम्बन्ध में कहती है, कि उसने अपने आप को ऐसा शून्य या खाली कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और, फिर मनुष्य के रूप में प्रकट होकर उसने अपने आप को इतना दिन किया और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु वरन् क्रूस की मृत्यु भी सह ली। (फिलिप्पियों २:७,८)। यह दर्शाता है कि यीशु पिता परमेश्वर का कितना आदर करता था और उसका कितना आज्ञाकारी था यीशु का कोई भी काम प्रार्थना के बिना नही होता था। प्रार्थना करना उसका स्वभाव था। इस से हम यह भी देखते हैं कि वह कितना दीन था और हर बात में वह परमेश्वर के ऊपर आश्रित रहना चाहता था। जब वह युहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के पास से बपतिस्मा लेने को आया था, तो बाइबल हमें बताती है कि यूहन्ना यीशु को यह कहकर रोकने लगा कि तुझे बपतिस्मा लेने की आवश्यकता नहीं है बल्कि मुझे तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की

आवश्यकता है। लिखा है, कि इस पर यीशु ने उस से कहा था कि नहीं, परन्तु यह आवश्यक है कि हम परमेश्वर की सारी धार्मिकता अर्थात उसकी सारी आज्ञाओं का पालन करें। (मत्ती ३:१३-१७)। और फिर बपतिस्मा लेकर जब वह पानी में से ऊपर आया था तो लिखा है कि वह "प्रार्थना कर रहा था"। (लूका ३:२१)। अपने चेलों का चुनाव करने से पहिले उसने प्रार्थना करी। जब उसने पाँच हज़ार लोगों की भीड़ को भोजन खिलाया तो पहिले उसने प्रार्थना की। इस से पहिले कि लाज़र यीशु की आवाज़ सुनकर मरे हुओं में से जी उठकर कब्र में से बाहर आता, यीशु ने परमेश्वर से प्रार्थना करके कहा था कि मैं तुझे धन्यवाद देता हूं कि तू मेरी सुनता है। फिर, हम जानते हैं, कि इस से पहिले कि वह सताया गया और क्रूस पर बिना किसी दोष के चढ़ाया गया, उसने भविष्य में अपनी मृत्यु को देखकर एक जगह एकान्त में बैठकर परमेश्वर से यह प्रार्थना की थी, कि हे परमेश्वर इस सम्बन्ध में तेरी इच्छा पूरी हो। और फिर, जब वे उसे लकड़ी के फट्टों के ऊपर लिटाकर कीलों से उस के हाथ-पांव ठोक रहे थे, तो बार-बार उसके होठों से प्रार्थना के ये शब्द उनके लिये निकल रहे थे, कि "हे पिता, इन्हें क्षमा कर; क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं।" (लूका २३: ३४)।

जब हम यीशु के उपदेशों को उसके नए नियम में से पढ़ते हैं तो हम यह देखे बिना नहीं रह सकते कि प्रार्थना करना न केवल यीशु का स्वभाव ही था परन्तु उसने अपनी शिक्षा में भी प्रार्थना के ऊपर बहुत अधिक बल दिया है। एक जगह बाइबल में हम पढ़ते हैं कि जब यीशु लोगों को उपदेश दे रहा था तो उसने इस विषय में कि नित्य प्रार्थना करना और हियाव नहीं छोड़ना चाहिए एक दृष्टान्त देकर यूं कहा था :

"कि किसी नगर में एक न्यायी रहता था, जो न परमेश्वर से डरता था और न किसी मनुष्य की परवाह करता था। और उसी नगर में एक विधवा भी रहती थी : जो उसके पास आ आकर कहा करती थी,

कि मेरा न्याय चुकाकर मुझे मुदई से बचा। उसने कितने समय तक तो न माना परन्तु अन्त में मन में विचार कर के कहा, यद्यपि मैं न परमेश्वर से डरता हूं, और न मनुष्यों की कुछ परवाह करता हूं। तौभी यह विधवा मुझे सताती रहती है, इसलिये मैं उसका न्याय चुकाऊंगा, कहीं ऐसा न हो कि वह घड़ी-घड़ी आकर अन्त को मेरा नाक में दम करे।" यह कहकर, "प्रभु ने कहा, सुनो, कि यह अधर्मी न्यायी क्या कहता है? सो क्या परमेश्वर अपने चुने हुओं का न्याय न चुकाएगा, जो रात दिन उसकी दुहाई देते रहते हैं; और क्या वह उनके विषय में देर करेगा? मैं तुम से कहता हूं; वह तुरन्त उनका न्याय चुकाएगा, तौभी मनुष्य का पुत्र जब आएगा, तो क्या वह पृथ्वी पर विश्वास पाएगा?" और फिर, "उसने कितनों से जो अपने ऊपर भरोसा रखते थे, कि हम धर्मी हैं और औरों को तुछ जानते थे, यह दृष्टाँत कहा: कि दो मनुष्य मन्दिर में प्रार्थना करने के लिए गए; एक फ़रीसी था और दूसरा चुंगी लेनेवाला। फ़रीसी खड़ा होकर अपने मन में यों प्रार्थना करने लगा, कि हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं, कि मैं और मनुष्यों की नाईं अन्धेर करनेवाला, अन्यायी और व्यभिचारी नहीं, और न इस चुंगी लेने वाले के समान हूं। मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूं; मैं अपनी सब कमाई का दसवाँ अंश भी देता हूं। परन्तु चुंगी लेनेवाले ने दूर खड़े होकर, स्वर्ग की ओर आँखें उठाना भी न चाहा, वरन अपनी छाती पीट-पीट कर कहा; हे परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर। मैं तुम से कहता हूं," यीशु ने कहा, "कि वह दूसरा (अर्थात् फ़रीसी) नहीं; परन्तु यही मनुष्य धर्मी ठहराया जाकर अपने घर गया; क्योंकि जो कोई अपने को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा; और जो अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।" (लूका १८:१-१४)।

प्रभु यीशु के इन दृष्टान्तों से दो बड़ी ही आवश्यक बातें हम यह सीखते हैं, कि एक तो हमें निरन्तर, प्रति-दिन प्रार्थना में लगे रहना

चाहिये, और दूसरे, प्रार्थना करने के लिये पममेश्वर के सम्मुख हमें बड़ी ही दीनता तथा नम्रता के साथ आना चाहिये। परमेश्वर अपने लोगों की प्रार्थना अवश्य सुनेगा। उसका उत्तर यद्यपि हमारी इच्छा के अनुसार हमें न मिले; परन्तु हमारी प्रार्थना के जवाब में जो भी वह करेगा वह हमारी ही भलाई के लिये होगा। (रोमियों ८:२८)। परन्तु प्रार्थना में हमें अपने आप को परमेश्वर के सामने बड़ा बना कर प्रस्तुत नहीं करना चाहिये। वह जानता है कि हम क्या हैं और हमारे मन में क्या हैं वह हमारे विचार तथा मन की मनसा से परिचित है। चाहे हम अपनी दृष्टि में कितने भी धर्मी और अच्छे क्यों न हों परमेश्वर के सम्मुख हम अपवित्र और निर्बल ही हैं।

प्रार्थना के सम्बन्ध में पिछली कुछ शताब्दियों से लोगों के भीतर कुछ बड़ी अनुचित सी धारणाएं पैदा हो गई हैं। और उनमें से एक विशेष धारणा यह है कि लोग अपने मन से प्रार्थना न करके किताबों में से पढ़-पढ़कर प्रार्थना करते हैं। अनेक कलीसियाओं में किताबों में लिखी प्रार्थनाओं को बार-बार पढ़ा जाता है। कई लोग मुझे लिखते हैं और कहते हैं कि मैं उन्हें प्रार्थना की पुस्तक भेज दूं। यह बात वास्तव में बड़ी ही अनुचित है, क्योंकि प्रार्थना कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे पुस्तक में से पढ़कर परमेश्वर के सामने रखा जाए। मान लीजिए आप एक प्रार्थना को टेप में भर लें, और जब भी प्रार्थना करने को आपका मन करे आप उस टेप को बजा लें। क्या ऐसी प्रार्थना वास्तविक होगी ? प्रार्थना एक बिन्ती है जिसे उस मनुष्य के मन से निकलना चाहिये जो प्रार्थना कर रहा है। और फिर प्रार्थना में एक विशेषता यह होनी चाहिए कि जिस वस्तु या बात की आवश्यकता हो उसी के लिये प्रार्थना की जाए। प्रभु यीशु ने एक जगह इस सम्बन्ध में यूं कहा था, कि प्रार्थना करते समय अर्थहीन बातों को न दोहराना और अधिक न बोलना। (मत्ती ६:७)। अर्थात केवल उस समय की आवश्यकता अनुसार ही प्रार्थना करना। यही बात हम यीशु की प्रार्थना

में भी देखते हैं। जब भी उसने प्रार्थना करी तों उसने विशेष रूप से उसी बात को परमेश्वर के सामने रखा जिसकी उस समय उसको आवश्यकता थी। किसी अन्य मनुष्य की लिखी प्रार्थना को उसकी पुस्तक में से पढ़कर हम यीशु की तरह व्यक्तिगत और आवश्यकतानुसार प्रार्थना नहीं कर सकते। ऐसी प्रार्थना अर्थहीन बन जाती है, ठीक ऐसे ही जैसे कि एक तोता आपकी बात को सुनकर बार-बार उसे दोहराता है। हमारी प्रार्थना अपनी व्यक्तिगत होनी चाहिए, उसे मन से निकलना चाहिए। केवल प्रार्थना का दिखावा नहीं करना चाहिए। और बाइबल हमें सिखाती है, कि हमें अपनी प्रार्थना को परमेश्वर के सम्मुख प्रभु यीशु मसीह के द्वारा रखना चाहिए, (कुलुस्सियों ३: १७; यूहना १६:२३,२४), क्योंकि यीशु परमेश्वर तथा मनुष्यों के बीच में एक बिचवई है। (१ तीमुथियुस २:५)। वह स्वर्ग से, परमेश्वर के पास से पृथ्वी पर आया था और उसनें मनुष्यों के पापों का प्रायश्चित करने के लिये अपने प्राणों को बलिदान किया था। वह हमारे पापों का छुटकारा है। उसी के द्वारा, उसमें विश्वास लाकर और उसकी आज्ञा को मानकर, परमेश्वर के साथ हमारा मेल होता है। (२ कुरिन्थियों ५:१७-२१ ; गलतियों ३:२६,२७ ; मरकुस १६:१५-१६)। इसलिये जब हम उसके नाम से परमेश्वर से कुछ मांगते हैं तो वह हमारी सुनता है।

एक जगह बाइबल में हम पढ़ते हैं कि यीशु ने एक जन्म के अन्धे की आँखें खोली थीं। उस मनुष्य नें यीशु में विश्वास किया था और उसकी आज्ञा का पालन किया था। परन्तु कुछ यहूदी लोग जो यीशु से वैर रखते थे, इस बात को मानने को तैयार नहीं हुए कि यीशु ने ही उसकी आंखें खोली हैं। सो वे उस मनुष्य से कहने लगे कि इस बात के लिये तू परमेश्वर की स्तुति कर और यीशु का नाम न ले क्योंकि वह तो एक पापी मनुष्य है। परन्तु जिस मनुष्य की आँखें यीशु ने खोली थीं उसने उनसे कहा कि "हम जानते हैं कि परमेश्वर पापियों

को नहीं सुनता परन्तु यदि कोई परमेश्वर का भक्त हो, और उसकी इच्छा पर चलता है, तो वह उसकी सुनता हैं।" (यूहन्ना ९:३१)। यह एक सच्चाई है। परमेश्वर प्रत्येक उस मनुष्य की प्रार्थना को सुनता है जो उस से डरता है और उसकी इच्छा पर चलता है। इसलिये यदि हम चाहते हैं कि परमेश्वर हमारी प्रार्थना को सुने और उसका जवाब दे तो पहिले हमें उससे डरना और उसकी इच्छा पर चलना सीखना चाहिए। जब तक हम अपने पाप के कारण उस से अलग और दूर हैं वह हमारी प्रार्थना नहीं सुनेगा। उसकी इच्छानुसार हमें चाहिए मि हम उसके पुत्र यीशु में विश्वास लाएं और अपना मन फिराकर बपतिस्मा लें।

अपने सत्य वचन पर चलने के लिये परमेश्वर आपको शक्ति दे।

कलीसिया के विषय में

आज अपने पाठ में विशेष रूप से हम इस बात पर विचार करेंगे कि बाइबल हमें कलीसिया के बारे में क्या सिखाती है। कलीसिया जिसे अंग्रेज़ी भाषा में चर्च कहा जाता है, वास्तव में क्या है? यह शब्द वास्तव में यूनानी भाषा के "एक्कलीसिया" शब्द से लिया गया है, और एक्कलीसिया का अर्थ है : "बुलाए हुए लोगों की एक मन्डली।" सो कलीसिया वास्तव में बुलाए हुए लोगों की एक मन्डली है। बाइबल में हम पढ़ते हैं, कि कलीसिया को प्रभु यीशु मसीह ने बनाया था। उलने अपने चेलों से कहा था कि मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा। (मत्ती १६:१८)। प्रभु यीशु ने अपने चेलों को यह अधिकार नहीं दिया था कि वे जाकर अपनी-अपनी कलीसियाएं बनाएं या अलग-अलग नामों की कलीसियाओं का आरम्भ करें। परन्तु उसने उनसे कहा था कि मैं स्वयं अपनी कलीसिया बनाऊंगा। परमेश्वर के वचन की पुस्तक पवित्र बाइबल में लिखी अनेक बातों को लोगों ने शताब्दियों से तोड़ा-मरोड़ा है और उन्हें गलत प्रकार से समझा है। और मेरे विचार में बाइबल की जिस शिक्षा को सबसे अधिक लोगों ने गलत तरह से समझा है उसका सम्बन्ध कलीसिया से है। लोगों ने आज कलीसिया की धारणा को बिल्कुल बदल दिया है। लोगों का आज बहुमत यह है कि पृथ्वी पर आज जितने भी सम्प्रदाय हैं वे सब मिलकर बाइबल की वह कलीसिया है जिसे प्रभु यीशु ने बनाया था। परन्तु यह बात बिल्कुल गलत है, अनुचित है, और परमेश्वर के वचन की शिक्षा के विरुद्ध है।

बाइबल में हम कुरिन्थुस नाम के एक स्थान के बारे में पढ़ते

हैं। कुरिन्थुस में बहुत से लोग प्रभु यीशु की अनुयायी थे। एक जगह बाइबल में उन्हीं लोगों को लिखकर प्रेरित पौलुस उन से यूँ कहता हैं : "हे भाइयो मैं तुम से यीशु मसीह जो हमारा प्रभु है उसके नाम के द्वारा बिनती करता हूं, कि तुम सब एक ही बात कहो; और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो। क्योंकि हे मेरे भाइयो, खलोए के घराने के लोगों ने मुझे तुम्हारे विषय में बताया है कि तुम में झगड़े हो रहे हैं। मेरा कहना यह है, कि तुम में से कोई तो अपने आप को पौलुस का, कोई अप्पुल्लोस का कोई कैफ़ा का, तो कोई मसीह का कहता है।" परन्तु, "क्या मसीह बट गया ? क्या पौलुस तुम्हारे लिये क्रूस पर चढ़ाया गया ?या तुम्हें पौलुस के नाम पर बपतिस्मा मिला ?" (१ कुरिन्थियों १:१०-१३)।

अब यहाँ हम क्या देखते हैं ? हम देखते हैं कि उन में आपस में फूट थी। वे सब एक ही यीशु मसीह का अनुसरण भिन्न-भिन्न मतों के अनुसार करना चाहते थे। वे उस कलीसिया में संतुष्ट नहीं थे जिसको मसीह ने बनाया था। वे सब अलग-अलग नामों की मन्डलियां बना रहे थे। परन्तु प्रेरित पौलुस ने उन से क्या कहा ? क्या इस बात के लिये उस ने उन की प्रशंसा की, और उनसे कहा कि ठीक है चाहे तुम कितनी भी अलग-अलग नामों की कलीसियाएं बनाओ तौभी वे सब मिलकर मसीह की कलीसिया ही हैं ? जी नहीं, उस ने उन से ऐसा नहीं कहा। परन्तु उसने उन सब को लताड़ा और उनसे कहा कि ऐसा करके तुम एक मसीह को कई टुकड़ों में बांट रहे हो। "क्या मसीह बंट गया ?" उस ने उन से पूछा। मान लीजिए यदि पौलुस आज जीवित होता तो आज पृथ्वी पर इतनी सारी भिन्न-भिन्न कलीसियाओं को देखकर वह क्या कहता ?

जिस कलीसिया को आरम्भ में यीशु मसीह ने बनाया था वह उन सब लोगों की एक विशाल मन्डली थी जिन्होंने उस के चेलों के द्वारा उसके सुसमाचार को सुनकर उस पर विश्वास किया था; और उसकी

आज्ञा को मानकर अपने पापों से मन फिराया था, और अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लिया था। (लूका २४:४६-४९; प्रेरितों २)। जहां कहीं भी पृथ्वी पर लोगों ने उसके सुसमाचार को सुनकर उसकी आज्ञा का पालन किया था उस ने उन्हें अपनी उस विशाल कलीसिया में मिला लिया था। (प्रेरितों २:४७)। अनेक स्थानों पर उन लोगों की मन्डलियां थीं और बाइबल में हम पढ़ते हैं कि वे सब मन्डलियां मसीह की कलीसियाएं कहलाती थीं। (रोमियों १६:१६)। उन में से न तो कोई कैथलिक था और न कोई प्रोटेस्टैन्ट था, बाइबल में लिखा है, कि वे सब लोग केवल मसीही कहलाते थे। (प्रेरितों ११:२६; २६:२८)।

फिर, जिस कलीसिया को आरम्भ में प्रभु यीशु मसीह ने बनाया था, बाइबल में उस कलीसिया को एक देह कहकर सम्बोधित किया गया है। जिस प्रकार देह में बहुत से अंग होते हैं उसी प्रकार बाइबल में कलीसिया को भी दर्शाया गया है। अर्थात्, कलीसिया एक देह के समान है और कलीसिया के सभी सदस्य उस देह के अंग हैं। परन्तु देह के भीतर सबसे मुख्य स्थान सिर का होता है, इसलिये मसीह को कलीसिया का सिर कहा गया है। (इफिसियों १:२२,२३; कुलुस्सियों १:१८)। परन्तु बाइबल इस बात को भी स्पष्टता से बताती है कि देह केवल एक ही है। (इफिसियों ४:४) और क्योंकि बाइबल के अनुसार देह ही कलीसिया है, इसलिए केवल एक ही कलीसिया है, क्योंकि एक ही देह है। विभिन्न कलीसियाएं या सम्प्रदाय कलीसिया के अंग नहीं हैं, परन्तु प्रत्येक मसीही व्यक्तिगत रुप से उस देह का अंग है जो मसीह की कलीसिया है। इस सम्बन्ध में प्रेरित पौलुस मसीही लोगों को बाइबल में लिखकर इस प्रकार कहता है :

"क्योंकि जिस प्रकार देह तो एक है, और उसके अंग बहुत से हैं, और उस एक देह के सब अंग, बहुत होने पर भी सब मिलकर एक ही देह है, उसी प्रकार मसीह भी है। क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो, क्या

यूनानी, क्या दास, क्या स्वतंत्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिया, और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया। इसलिये कि देह में एक ही अंग नहीं परन्तु बहुत से हैं। यदि पांव कहे; कि मैं हाथ नहीं, इसलिये देह का नहीं, तो क्या वह इस कारण देह का नहीं ? और यदि कान कहे ; कि मैं आंख नहीं, इसलिये देह का नहीं, तो क्या वह इस कारण देह का नहीं है ?" फिर वह कहता है, कि, "यदि सारी देह आँख ही होती तो सुनना कहां होता ? और यदि सारी देह कान ही होती, तो सूंघना कहां होता ? परन्तु सचमुच परमेश्वर ने अंगो को अपनी इच्छा के अनुसार एक-एक करके देह में रखा है। यदि वे सब एक ही अंग होते, तो देह कहां होती ? परन्तु अब अंग तो बहुत से हैं, परन्तु देह एक ही है।आंख हाथ से नहीं कह सकती, कि मुझे तेरा प्रयोजन नहीं, और न सिर पांवो से कह सकता है, कि मुझे तुम्हारा प्रयोजन नहीं। परन्तु देह के वे अंग जो औरों से निर्बल दीख पड़ते हैं, बहुत ही आवश्यक हैं - और देह के जिन अंगो को हम आदर के योग्य नहीं समझते हैं उन्हीं को हम अधिक आदर देत हैं; और हमारे शोभाहीन अंग और भी बहुत शोभायमान हो जाते हैं। फिर भी हमारे शोभायमान अंगों को इस का प्रयोजन नहीं, परन्तु परमेश्वर ने देह को ऐसा बना दिया है, कि जिस अंग को घटी थी उसी को और भी बहुत आदर हो। ताकि देह में फूट न पड़े, परन्तु अंग एक-दूसरे की बराबर चिन्ता करें। इसलिये यदि एक अंग दुख पाता है, तो सब अंग उसके साथ दुख पाते हैं; और यदि एक अंग की बड़ाई होती है, तो उसके साथ सब अंग आनन्द मनाते हैं। इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और अलग-अलग उसके अंग हो।" (१ कुरिन्थियों १२:१२-२७)।

सो हम देखते हैं, कि कलीसिया के बारे में बाइबल हमें बड़े ही स्पष्ट शब्दों में बताती है। यदि हम प्रभु यीशु मसीह की कलीसिया के बारे में जानना चाहते हैं; यदि हम उसकी कलीसिया के एक सदस्य

बनना चाहते हैं, तो हमें चाहिए कि हम बाइबल को पढ़े। बाइबल हमें बताती है कि मसीह की क़लीसिया क्या है। अर्थात् कलीसिया मसीह के उन अनुयायीयों की एक मन्डली है जिन्हों ने उसमें विश्वास लाकर उसकी आज्ञा को माना है, और जो प्रति-दिन उसकी आज्ञाओं पर चलते हैं। जो लोग मसीह की आज्ञा को मानकर उसके अनुयायी बनते हैं उन्हें वह स्वयं अपनी कलीसिया में मिलाता है। मसीह की कलीसिया किसी ऐसे क्लब या संगठन के समान नहीं है, जिसका सदस्य बनने के लिये किसी मनुष्य की आज्ञा लेनी पड़ती है या लिखा-पढ़ी करनी पड़ती है, या चंदा देना पड़ता है। मनुष्यों के बनाए हुए संगठनों या सम्प्रदायों का सदस्य बनने के लिये यद्यपि लोगों को ऐसा ही करना पड़ता है; परन्तु मसीह की कलीसिया के सदस्य हम केवल उसकी आज्ञा को मानकर ही बन सकते हैं। प्रभु जानता है कि कौन मनुष्य उस में वास्तव में विश्वास करता है; वह जानता है कि कौन उसकी आज्ञा को मन से मानता है; और इसलिये वह जानता है कि कौन वास्तव में उसकी मन्डली मे है। कोई मनुष्य परमेश्वर को धोखा नहीं दे सकता।

एक अन्य बात जो कलीसिया के बारे में बाइबल हमें बताती है, वह यह है कि परमेश्वर की दृष्टि में कलीसिया का महत्व बहुत ही बड़ा है। बाइबल कहती है कि कलीसिया को मसीह ने अपने लोहू से मोल लिया है। (प्रेरितों २०:२८)। परन्तु बाइबल हमें यह भी बताती है कि मसीह ने अपना लोहू पृथ्वी पर प्रत्येक मनुष्य के पापों की क्षमा के लिये बहाया था। (मत्ती २६:२८) सो इसका अर्थ यह है कि, मसीह की कलीसिया के भीतर जितने भी लोग हैं उन सबों ने उसके लोहू के द्वारा अपने पापों से उद्धार प्राप्त किया है। मसीह ने जिस कलीसिया को अपने लोहू से मोल लिया है वह कलीसिया मिट्टी और पत्थरों की बनी हुई कलीसिया नहीं है, परन्तु वह कलीसिया उसके वे लोग हैं जिन्हों ने उसके लोहू के द्वारा अपने पापों से मुक्ति प्राप्त

कर ली है, जो उस पर विश्वास रखते हैं और जो उसकी आज्ञाओं को मानते हैं।

यदि इस विषय में आप और अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं, तो आप हमारे यहाँ से बाइबल के पाठों को मंगवाकर पढ़ सकते हैं, या व्यक्तिगत रुप से मुझे लिख सकते हैं। मेरी आशा है कि आप सारी गम्भीरता के साथ इन बातों पर विचार करेंगे।

पश्चाताप के विषय में

आज मैं आप के सामने विशेष रुप से इस बात को रखना चाहता हूं कि बाइबल की एक बड़ी ही प्रमुख शिक्षा यह है कि पश्चाताप किए बिना पृथ्वी पर कोई भी मनुष्य उद्धार नहीं पाएगा। प्रेरित पौलुस बाइबल में एक जगह कहता है कि "अज्ञानता के समयों की उपेक्षा करके परमेश्वर अब हर जगह के सब मनुष्यों को आज्ञा देता है कि पश्चाताप करें। क्योंकि उसने एक दिन निश्चित किया है जिसमें, एक मनुष्य के द्वारा जिसको उस ने नियुक्त किया है, वह धार्मिकता से संसार का न्याय करेगा; और उसने मृतकों में से उसे जिलाकर इस बात को सब मनुष्यों पर प्रमाणित कर दिया है।" (प्रेरितों १७:३०,३१)।

सो, परमेश्वर की यह आज्ञा है कि पृथ्वी पर सब मनुष्य पश्चाताप करें। परन्तु पश्चाताप का क्या अर्थ है? सांसारिक दृष्टिकोण से मनुष्य के निकट पश्चाताप करने का अर्थ है, दुखी होना, या पछताना, या किसी बात के प्रति शोक व्यक्त करना। जैसे कि मान लीजिए कोई व्यक्ति चोरी करते हुए पकड़ा जाए तो उसे इस बात से दुख होगा कि वह क्यों पकड़ा गया। परन्तु जिस पश्चाताप की आज्ञा परमेश्वर ने मनुष्य को दी है उसका अभिप्राय दुखी होने या शोकित होने से नहीं है। बाइबल में एक अन्य स्थान पर इस सम्बन्ध में हम इस प्रकार पढ़ते हैं: "क्योंकि परमेश्वर-भक्ति का शोक ऐसा पश्चाताप उत्पन्न करता है जिस का परिणाम उद्धार है।" (२ कुरिन्थियों ७:१०)। सो हम देखते हैं कि दुख या शोक वास्तव में पश्चाताप नहीं है। परन्तु शोक पश्चाताप को

उत्पन्न करता है। अब शोक दो प्रकार के हैं। अर्थात् एक तो ऐसा शोक है जो सांसारिक है, जैसे कि किसी का कोई नुक्सान हो जाए, या कोई दुर्घटना हो जाए उसके प्रति दुख या शोक व्यक्त करना। परन्तु इस प्रकार के शोक का, जो कि सांसारिक है, मनुष्य के उद्धार से कोई सम्बन्ध नहीं है। लेकिन, दूसरी ओर एक ऐसा शोक है जो परमेश्वर-भक्ति के कारण होता है, अर्थात परमेश्वर के वचन को सुनने के द्वारा, यह जानकर होता है कि यद्यपि परमेश्वर हमसे बहुत अधिक प्रेम करता है किन्तु तौभी हम उसकी इच्छा के अनुसार जीवन व्यतीत नहीं कर रहे हैं। ऐसा शोक परमेश्वर की इच्छा के अनुसार है, यह परमेश्वर भक्ति का शोक है, और जब मनुष्य के मन में ऐसा शोक या दुख उत्पन्न होता है तो वह उसे पश्चाताप करने को उभारता है, और पश्चाताप का परिणाम उद्धार होता है। परन्तु पश्चाताप क्या है ?

एक बार प्रभु यीशु ने पश्चाताप के अर्थ को प्रकट करने के लिये एक छोटा सा दृष्टान्त लोगों के सामने रखकर यूं कहा था, कि किसी मनुष्य के दो पुत्र थे; उस ने पहिले के पास जाकर उस से कहा हे पुत्र, दाख की बारी में काम कर। किन्तु उस ने उत्तर दिया, मैं नहीं जाऊंगा, परन्तु पीछे पछताकर गया। फिर दूसरे के पास जाकर ऐसे ही कहा, किन्तु उसने उत्तर दिया जी हाँ, जाता हूं परन्तु नहीं गया। यह कहकर यीशु ने उन लोगों से पूछा कि उन दोनों में से किसी ने पिता की इच्छा को पूरा किया? उन्होंने कहा, कि उस पहिले पुत्र ने जिस ने पहिले तो पिता की आज्ञा मानने से इंकार कर दिया था परन्तु फिर पछताकर उसकी आज्ञा मानी। इस पर यीशु ने उनसे कहा, कि कुकर्मी तथा पापी तुम से पहिले परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेंगे, क्योंकि उन्होंने उसके वचन को सुन कर उसकी इच्छा को माना है, परन्तु तुम उन्हें देखकर भी नहीं पछताए। (मत्ती २१:२८-३२)।

सो इस से हम देखते हैं कि पश्चाताप करने का वास्तविक अर्थ है

अपने मन को फिराना। वह पुत्र पहिले तो अपने पिता की इच्छा के विरुद्ध जाना चाहता था, वह अपनी इच्छा पर चलना चाहता था। परन्तु फिर उसने अपने मन को बदला और अपनी इच्छा को छोड़कर पिता की इच्छा को पालन करने का उसने निश्चय किया। यह वास्तव में पश्चाताप था। इसी प्रकार का एक अन्य दृष्टान्त देकर यीशु ने एक जगह यूं कहा था, कि एक पिता के दो पुत्र थे, पिता बड़ा ही धनी था। परन्तु उसका छोटा पुत्र बुरी संगति में पड़ गया, और अपने मित्रों के कहने में आकर उसने अपने पिता के घर को छोड़कर कहीं दूर चले जाने का निश्चय किया। सो उसने अपने पिता से अपने हिस्से की सम्पत्ति माँग ली, और पिता के बहुत मना करने पर भी वह घर छोड़कर किसी दूर देश में चला गया। वहां उसने कुछ ही समय में अपने अच्छे वक्त के दोस्तों के साथ मिलकर अपनी सारी सम्पत्ति को बुरे-बुरे कामों में उड़ा दिया। कुछ ही दिनों के भीतर उसके सारे मित्र उसे छोड़कर चले गए और वह अकेला रह गया। अब उसके पास न तो कोई मित्र था और न पैसा था। कुछ समय तो उसने भीख माँगकर या जैसे-तैसे अपना गुज़ारा चलाया। परन्तु जब उस देश में एक बहुत बड़ा अकाल पड़ा तो वह कंगाल हो गया और भूखा मरने लगा। जब उसने कोई नौकरी ढूंढी तो बड़ी ही मुश्किल से उसे वहां के एक निवासी के यहां सुअरों को चराने का काम मिल गया। अब वह सुअर चराता था, और जिन फलियों को सुअर खाते थे उन्हीं फलियों में से खाकर वह अपना पेट भरा करता था। कुछ और दिन ऐसे ही निकल गए। परन्तु तभी एका-एक उसके मन में विचारों की एक लहर दौड़ गई, उसने अपने पिता के प्रेम को याद किया और उन सब आशीषों को याद किया जो उसे अपने पिता के घर में प्राप्त थीं। उसने सोचा कि मेरे पिता के घर में नौकर भी बड़े अच्छे-अच्छे कपड़े पहिनते हैं और अच्छा भोजन खाते हैं और मैं यहां भूखा मर रहा हूं; उसने सोचा कि किस प्रकार वह अपने पिता की बात न मानकर पिता की इच्छा का विरोध करके घर छोड़ कर चला आया था।

और यह सब सोचकर उसे बड़ा ही दुख हुआ। तब उसने अपने मन में यह निश्चय किया कि अब मैं उठकर अपने पिता के पास वापस जाऊंगा, और उस से कहूंगा कि पिता जी मैं ने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है, मैं बड़ा ही अधर्मी हूं और मैं इस योग्य नहीं हूं कि अब तेरा पुत्र कहलाऊं, बस इतनी कृपा कर कि अब मुझे अपने पास अपने एक मजदूर की नाई रख लें। और इस निश्चय के साथ वह उठा और उठकर अपने पिता के पास वापस चला गया। (लूका १५:११-२०)।

यीशु के इस दृष्टान्त में हम उस सच्चे पश्चाताप को देखते हैं जिसकी आज्ञा परमेश्वर ने पृथ्वी पर सब मनुष्यों को दी है। न केवल यीशु ने इस दृष्टान्त में पश्चाताप के अर्थ को ही स्पष्ट किया है, परन्तु यहाँ यीशु ने प्रत्येक मनुष्य की एक बड़ी ही महत्वपूर्ण आवश्यकता को भी प्रकट किया है। यीशु के इस दृष्टान्त में वह लड़का प्रत्येक मनुष्य का प्रतीक है और वह पिता परमेश्वर का प्रतीक है। जिस प्रकार वह लड़का अपनी मनमानी करके अपने पिता को छोड़कर उससे दूर चला गया था, उसी प्रकार आज प्रत्येक मनुष्य परमेश्वर से दूर है। पवित्र बाइबल में लिखा है, कि तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुमको तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है। (यशायाह ५९:२)। मनुष्य जब तक इस जगत में है वह अपने अधर्म के कामों के फलस्वरुप परमेश्वर से दूर है। और जब वह इस जगत से चला जाएगा तो वह हमेशा के लिये परमेश्वर से अलग और दूर रहेगा। परन्तु जिस बात के ऊपर यीशु ने अपने इस दृष्टान्त में बल दिया है वह यह है, कि इस से पहिले कि मनुष्य अपने अधर्म तथा पाप में मर जाए उसे चाहिये कि वह अपनी दुर्दशा के ऊपर गम्भीरता के साथ विचार करे और इस बात का निश्चय करे, कि मैं अब अपने पिता परमेश्वर के पास वापस जाऊंगा। इस से बड़ी मनुष्य की आज और कोई आवश्यकता नहीं है। मनुष्य अपने लिए घर बनवा सकता है, पैसा इकट्ठा कर सकता है, डिग्रियां

प्राप्त कर सकता है; आदर, सम्मान और ओहदे हासिल कर सकता है। परन्तु यदि वह पाप से अपना मन फिराकर परमेश्वर के पास वापस नहीं लौट आता, तो वह उस लड़के के समान है जो अपने पिता से दूर जाकर सुअरों के साथ जीवन बिता रहा था। ऐसा मनुष्य संसार की दृष्टि में भले ही धनी या बड़ा क्यों न माना जाए, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में वह एक निर्धन तथा मूर्ख है। (लूका १२:१६-२१)। "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे" प्रभु यीशु ने एक बार कहा था, "और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा?" (मत्ती १६:२६)।

आप चाहे कोई भी क्यों न हों, धनी हो या निर्धन हों; या किसी जाति के हों, आप को यह अनुभव करने की आवश्यकता है कि आप परमेश्वर की इच्छा पर न चलने के कारण उस से अलग तथा दूर हैं। पृथ्वी पर आप की सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि आप अपने पाप तथा अधर्म के उन कामों से जो परमेश्वर की इच्छानुसार नहीं हैं अपना मन फिराएं और परमेश्वर की इच्छा मानकर उसके पास वापस लौट आएं। वह चाहता है कि आप अपना विश्वास तथा भरोसा सभी अन्य वस्तुओं पर से हटाकर उसके पुत्र यीशु पर विश्वास लाएं, क्योंकि उसे परमेश्वर ने उसके बलिदान के कारण जगत के पापों का प्रायश्चित ठहराया है। और परमेश्वर की इच्छा प्रत्येक मनुष्य के लिए यह है कि हर एक पाप से अपना मन फिराकर अपने पापों की क्षमा के लिए जल के भीतर बपतिस्मा लें। (यूहन्ना ३:१६; प्रेरितों २:३८; ८:३५-३६)। परमेश्वर की इस इच्छा को हम उसके वचन की पुस्तक पवित्र बाइबल के भीतर पढ़ते हैं। परन्तु परमेश्वर अपनी पुस्तक के भीतर हमें यह भी बताता है, कि यदि हम उसकी इच्छा को नहीं मानेंगे तो उसने एक दिन ठहराया है जिस में वह सारे जगत के लोगों का न्याय करेगा और सब को उनके भले व बुरे कामों का प्रतिफल देगा। (२ कुरिन्थियों ५:१०)। प्रभु यीशु ने उस दिन का वर्णन करके कहा था, कि इससे अचम्भा मत

करो, क्योंकि उस दिन सब मरे हुए जी उठेंगे, जिन्होंने भलाई की है वे स्वर्ग में अनन्त जीवन पाने के लिए जी उठेंगे और जिन्हों ने बुराई की हैं वे नरक में अनन्त दन्ड पाने के लिए जी उठेंगे। (यूहन्ना ५:२८,२९)। यीशु ने यह भी कहा था कि तब अधर्मी अनन्त दन्ड भोगेंगे तथा धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे। (मत्ती २५:४६)।

मित्रो, मेरी आशा है कि आप परमेश्वर की इस विशाल चेतावनी की ओर अवश्य ही ध्यान देंगे और अपना मन फिराकर उसकी आज्ञा को मानने के द्वारा अनन्त जीवन में प्रवेश करने के लिये अपने आप को तैयार करेंगें।

स्वर्ग के विषय में

कुछ शब्द ऐसे हैं जो संसार की किसी भी भाषा में बड़े ही सुंदर लगते हैं, और ऐसा ही एक शब्द है "स्वर्ग।" यद्यपि हम में से किसी ने भी स्वर्ग को नहीं देखा है, और न ही इस जीवन के रहते हम स्वर्ग देख सकते हैं, किन्तु फिर भी हम सब की यही इच्छा है कि पृथ्वी के इस जीवन के समाप्त हो जाने के बाद हम स्वर्ग में प्रवेश करेंगे। परन्तु स्वर्ग क्या है? उसकी क्या विशेषता है? क्यों हम सब वहां जाना चाहते हैं? हम सब जानते है कि मृत्यु के बाद अनन्तकाल में रहने के लिये केवल दो ही स्थान हैं, अर्थात् स्वर्ग या नरक। और हम में से कोई भी उस दूसरे स्थान में रहने के लिए नहीं जाना चाहता। परन्तु हम सब स्वर्ग में जाना चाहते हैं। आज हम अपने पाठ में यह देखेगें कि बाइबल हमें स्वर्ग के विषय में क्या शिक्षा देती है।

जिस प्रकार से कि हम परमेश्वर को पूर्ण रूप से नहीं समझ सकते, क्योंकि हम शारीरिक मनुष्य हैं, उसी तरह से, जब तक हम इस पृथ्वी पर हैं, हम वास्तव में स्वर्ग को नहीं जान सकते। हम कह सकते हैं, कि परमेश्वर प्रेम है; हम परमेश्वर को पिता कह सकते हैं; हम उसे पवित्र और महान और सर्वशक्तिमान् कह सकते हैं; हम परमेश्वर को एक सच्चा न्यायी और धर्मी, इत्यादि कह सकते हैं। परन्तु, वास्तव में परमेश्वर क्या है? यह हम केवल तभी जानेगें जब हम परमेश्वर के पास जाकर सदा उसके साथ रहेंगे। ठीक यही बात स्वर्ग के विषय में

भी है। मनुष्य होने के कारण हम अपने ज्ञान तथा समझ में सीमित हैं। परमेश्वर की अनेक आत्मिक बातों को हम वास्तव में नहीं समझ सकते। क्योंकि हमारे सोच-विचार पृथ्वी के वातावरण और पृथ्वी की वस्तुओं पर आधारित हैं। यही कारण है कि जब प्रभु यीशु ने लोगों को परमेश्वर के बारे में बताया था तो उसने उनसे कहा था कि परमेश्वर "पिता" है। (मत्ती ६:९)। क्योंकि मनुष्य पिता से परिचित है; वही जानता है कि पिता वह है जो अपने बच्चों से प्रेम करता है, अर उनकी आवश्यकताओं को पूरा करता है। जब यीशु इस पृथ्वी पर था और उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने और स्वर्ग में वापस उठा लिये जाने का समय निकट आ गया था, तो उसने अपने चेलों से कहा था कि, "तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता, क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करुं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो।" (यूहन्ना १४:१-३)। यहां हम देखते हैं, कि यीशु ने स्वर्ग को अपने पिता का घर और एक बहुत बड़ा स्थान कहकर सम्बोधित किया था। मनुष्य जानता है कि उसे रहने के लिये एक घर की आवश्यकता है, और बहुत सारे लोगों के रहने के लिये एक बहुत बड़ी जगह की आवश्यकता है। सो यीशु ने कहा, कि मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, और मैं वहीं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जा रहा हूं। प्रेरित पौलुस बाइबल में लिखकर एक जगह कहता है, "क्योंकि हम जानते हैं, कि जब हमारा पृथ्वी पर का डेरा सरीखा घर गिराया जाएगा तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा, जो हाथों से बना हुआ घर नहीं, परन्तु चिरस्थाई है"। (२ कुरिन्थियों ५:१)।

स्वर्ग को मानवीय भाषा में व्यक्त करना वास्तव में बड़ा ही असम्भव

है, परन्तु हम उसे परमेश्वर का घर या एक चिरस्थाई भवन कहकर ही समझ सकते हैं। मान लीजिये आप किसी ऐसे व्यक्ति को हवाई जहाज़ के बारे में बताएं जिसने हवाई जहाज़ कभी भी नहीं देखा हो। आप उसे हवा में उड़ती हुई एक बहुत बड़ी चील का उदाहरण दे सकते हैं—इस से अच्छा उदाहरण आप को और कोई नहीं मिल सकता। यद्यपि उस व्यक्ति को हवाई जहाज़ के बारे में थोड़ा सा ज्ञान तो अवश्य हो जाएगा, परन्तु वास्तव में हवाई जहाज़ क्या है इस से परिचित वह केवल तभी होगा जब उसे स्वयं हवाई जहाज़ में बैठने का अवसर मिलेगा। ऐसे ही स्वर्ग के विषय में भी है। यद्यपि बाइबल में स्वर्ग के विषय में बहुत कुछ कहा गया है, परन्तु तौभी हम उस आत्मिक स्थान को पृथ्वी की भाषा में वास्तव में वैसे नहीं समझ सकते जैसे कि वह हक़ीकत में है।

प्रकाशितवाक्य नाम की पुस्तक बाइबल की सबसे अन्तिम पुस्तक है। इस पुस्तक को यूहन्ना नाम के यीशु के एक चेले ने लगभग ९६ ई० स० में लिखा था। यह मसीहीयत के आरम्भ का समय था और मसीह के अनुयायीओं के लिये एक बड़ा ही परीक्षा का समय था। क्योंकि उस समय रोम में नीरो नाम का एक बड़ा ही खूँखार राजा राज्य करता था और नीरो मसीही लोगों के खून का प्यासा था; वह उन्हें पृथ्वी पर से मिटा डालना चाहता था। उस समय सैकड़ों मसीही प्रभु यीशु मसीह में अपने विश्वास के लिये प्रति-दिन मरवा दिए जाते थे। यूहन्ना उस समय प्रभु यीशु की गवाही देने क कारण पतमुस नामक टापू में बन्दी था। प्रभु के लोगों को उस समय एक बढ़े ही मज़बूत विश्वास की आवश्यकता थी; उन्हें सान्तवना और ढ़ाढस की आवश्यकता थी। सो प्रभु ने कुछ ऐसी ही बातों को प्रेरित यूहन्ना पर प्रकट किया था जिनके द्वारा उन्हें ढ़ाढस तथा सान्तवना मिल सके। और उन्हीं बातों का वर्णन हमें प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में मिलता है। इस पुस्तक में प्रभु ने अपने लोगों को यह संदेश दिया है कि वे उसके कारण आनेवाले

क्लेशों तथा दुखा से न घबराएं, परन्तु अपनी इस आशा में बने रहें कि यदि वे उसके प्रति विश्वासी बने रहेंगे तो अन्त में जीत उन्हीं की होगी और वे उसके स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करके सदा उसके साथ रहेंगे। अपने प्रकाशन में प्रभु ने यूहन्ना को स्वर्ग का एक दृश्य भी दिखाया था, जिसका वर्णन करके यूहन्ना इस प्रकार कहता है :

"फिर मैंने सिंहासन में से किसी को ऊंचे शब्द से यह कहते हुए सुना, कि देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है, वह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा; और उन का परमेश्वर होगा। और वह उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी···और वह मुझे आत्मा में, एक बड़े और ऊंचे पहाड़ पर ले गया, और पवित्र नगर यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते दिखाया। परमेश्वर की महिमा उस में थी और उसकी ज्योति बहुत ही बहुमोल पत्थर, अर्थात् बिल्लौर के समान यशब की नाई स्वच्छ थी। और उसकी शहरपनाह बड़ी ऊंची थी··· और उसकी शहरपनाह की जुड़ाई यशब की थी, सारा नगर ऐसे चोखे सोने का था, जो स्वच्छ कांच के समान हो। और उस नगर की नेव हर प्रकार के बहुमोल पत्थरों से संवारी हुई थी···और नगर की सड़क स्वच्छ कांच के समान चोखे सोने की थी। और मैंने उसमें कोई मन्दिर न देखा, क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, और मेम्ना अर्थात् यीशु जो हमारे पापों के लिये बध हुआ था उसका मन्दिर है। और उस नगर में सूर्य और चांद के उजाले का प्रयोजन नहीं, क्योंकि परमेश्वर के तेज से उसमें उजाला हो रहा है...और उस में कोई अपवित्र वस्तु या घृणित काम करनेवाला या झूठ का गढ़नेवाला, किसी रीति से प्रवेश नहीं करेगा; पर केवल वे लोग जिन के नाम मेम्ने के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं···फिर उसने मुझे बिल्लौर की सी झलकती हुई जीवन के जल की नदी दिखाई, जो परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन

से निकलकर उस नगर की सड़क के बीचोंबीच बहती थी और नदी के इस पार ; और उस पार जीवन का पेड़ था उस में बारह प्रकार के फल लगते थे, और वह हर महीने फलता था; और उस पेड़ के पत्तों से जाति-जाति के लोग चंगे होते थे। और फिर स्राप न होगा, और परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन उस नगर में होगा, और उसके दास सेवा करेंगे। और उसका मुंह देखगे और उसका नाम उनके माथों पर लिखा हुआ होगा। और फिर रात न होगी, और उन्हें दीपक ओर सूर्य के उजियाले का प्रयोजन न होगा, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हे उजियाला देगा : और वे युगानुयुग राज्य करेंगे।" (प्रकाशितवाक्य २१, २२)।

सो इस प्रकार हम देखते हैं कि परमेश्वर ने अपनी बाइबल में हमें स्वर्ग का एक सुन्दर दृश्य दिया है। यद्यपि इस आत्मिक स्थान में इस प्रकार की जल की नदी, पेड़, सिंहासन, इत्यादि वस्तुएं नहीं होंगी जैसे कि हम इन वस्तुओं से परिचित हैं; और यद्यपि सोने तथा बहुमूल्य पत्थरों से बनी हुई कोई भी वस्तु वास्तव में वहां नहीं होगी परन्तु, क्योंकि ऐसी-ऐसी सुंदर, कीमतीं और बहुमूल्ब वस्तुओं से हम परिचित हैं, इसलिये परमेश्वर ने अपने वचन की पुस्तक में ऐसी ही वस्तुओं के उदाहरणों से हमें स्वर्ग के विषय में बताया है; ताकि हम जाने कि स्वर्ग एक बड़ा ही सुंदर, बहुमूल्य चाहने योग्य और एक सम्पूर्ण स्थान है। जहां केवल परमेश्वर के धर्मी लोग ही उसके साथ अनन्तकाल के लिये रहेंगे। बाइबल की शिक्षानुसार, स्वर्ग एक ऐसा स्थान है जिसे परमेश्वर ने अपने धर्मी लोगों के रहने के लिये तैयार किया है और जिसमें केवल वही लोग प्रवेश करेंगे जिन्हों ने उस में रहने के लिये अपने आप को तैयार किया है।

बाइबल में एक जगह हम पढ़ते हैं, कि एक बार जब यीशु के कुछ चेले उसके पास आकर बड़े आनन्द से उसे यह बताने लगे थे कि अब से दुष्टआत्माएं भी हमारे वश में हैं। इस पर लिखा है कि यीशु ने उनसे कहा कि इस बात से आनन्दित मत हो, परन्तु इस बात से आनन्दित हो

कि तुम्हारे नाम स्वर्ग पर लिखे हैं। (लूका १०:२०) अर्थात् किसी भी मनुष्य के लिये इससे बड़ी आनन्द की और कोई बात नहीं हो सकती कि उसका नाम स्वर्ग में लिखा है, अर्थात् परमेश्वर के लेखे में वह स्वर्ग में प्रवेश करने योग्य है।

क्या आप का नाम स्वर्ग में दर्ज है? क्या आप का नाम उसके जीवन की पुस्तक में लिखा है? बाइबल में लिखा है, कि जन लोगों ने परमेश्वर की उस धार्मिकता को पहिन लिया है जिसे उसने स्वर्ग से प्रकट किया है, वे लोग यीशु की धार्मिकता और अपने धर्मी जीवन के कारण उसके स्वर्ग में प्रवेश करेंगे। बाइबल कहती है कि, "जो पाप से अज्ञात था उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।" (२ कुरिन्थियों ५:२१)। और लिखा है कि "तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है परमेश्वर की संतान हो और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।" (गलतियों ३:२६,२७)।

क्या आप ने परमेश्वर की इच्छा को माना है? क्या आप ने अपने आप को उसके स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य बना लिया है? याद रखें कि "उस में कोई अपवित्र वस्तु या घृणित काम करनेवाला, या झूठ का गढ़नेवाला, किसी रीति से प्रवेश न करेगा; पर केवल वे लोग जिनके नाम मेम्ने के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं।"

नरक के विषय में

अब एक बार फिर से हमारे पास यह समय है कि हम अपने मनों को उन बातों की ओर लगाएं जिनका वर्णन हमें परमेश्वर के वचन की पुस्तक पवित्र बाइबल के भीतर मिलता है। क्या आपने बाईबल को पढ़ा है ? क्या आप जानते हैं कि बाइबल परमेश्वर के वचन की पुस्तक है ? क्या आप के मन में कुछ संदेहपूण प्रश्न हैं ? क्या आप उनके उत्तर जानना चाहते हैं ? क्या आप जानना चाहते हैं कि पृथ्वी पर मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य क्या है ? क्या आप धार्मिक हैं ? क्या आप वास्तव में परमेश्वर की इच्छा पर चलकर अपने जीवन को व्यतीत करना चाहते हैं ? इन सभी प्रश्नों को आपके सामने रखकर मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि आप को बाइबल को पढ़ने की आवश्यकता है। क्योंकि पृथ्वी पर केवल एक ही ऐसी पुस्तक है जिस में हमारे सभी प्रश्नों के उत्तर हमें मिलते हैं, और वह पुस्तक है बाइबल। परमेश्वर के वचन की पुस्तक बाइबल मनुष्यों के लिये एक चेतावनी की पुस्तक हैं। यह पुस्तक हमें बताती है कि जगत के सब लोग पाप में हैं, और पाप के कारण वे सब परमेश्वर से अलग हैं। और यदि मनुष्य परमेश्वर की इच्छा मानकर अपने पापों से मुक्ति प्राप्त नहीं करेगा, तो इस जीवन के बाद जहां वह हमेशा के लिए जाएगा वहां वह सदा परमेश्वर से दूर होकर रहेगा।

कुछ लोग मुझ से कहते हैं, कि हम बाइबल में लिखी बातों का प्रचार करके लोगों को डराना चाहते हैं। जी नहीं ऐसी हमारी कोई इच्छा

नहीं है। परन्तु क्या किसी को आनेवाले संकट से पहिले ही से खबरदार करना बुरी बात है ? क्या लोगों को यह बताना कि परमेश्वर की इच्छा पर चलकर वे उसके स्वर्ग में प्रवेश कर सकते हैं, और यदि वे उसकी इच्छा को नहीं मानेंगे तो वे अपने पाप का दन्ड पाएंगे, गलत बात है ? परन्तु डरता कौन है ? जो मनुष्य परमेश्वर की इच्छा पर चलता है उसे डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। परन्तु जो यह जानता है कि वह परमेश्वर की इच्छा के विरोध में काम कर रहा है वह मनुष्य डरता है। दुनिया में हर एक जगह जेल बने हुए हैं, और हमारे संसार में जेलों की आवश्यता भी है, क्योंकि पृथ्वी पर अच्छे और बुरे दोनों ही प्रकार के लोग हैं। परन्तु क्या हम जेल से डरते हैं ? यदि हम कोई बुरा काम नहीं करते, अपनी सरकार का कोई नियम नहीं तोड़ते, तो हमें जेल से डरने की कोई आवश्यता नहीं है । परन्तु जेल का डर उस मनुष्य को रहता है जो बुरे काम करता है, जो एक अपराधी है, और जो अपनी सरकार के बनाए गए नियमों का उल्लंघन करता है। और वास्तव में ऐसे ही लोगों के लिये जेल बनाई भी गई है। अच्छे लोगों को जेल से कोई डर नहीं है, क्योंकि वे जानते हैं कि जेल उन के लिये नहीं है। परन्तु जेल की आवश्यकता है। जेल की आवश्यकता इसलिये है, ताकि उसमें उन लोगों को रखा जाए जो समाज के लिये हानिकारक हैं, जो अन्य लोगों के लिये जान और माल का खतरा बन सकते हैं। लोग वहां अपने अपराध का दन्ड पाते हैं और अन्य लोगों को इस बात से शिक्षा मिलती है कि वे उनकी तरह कोई ऐसा काम न करें जिसका परिणाम जेल होता है। सो हम देखते हैं, कि कानून व्यवस्था और जेल, इत्यादि भलाई के लिये हैं। ये हमें डराने के लिये नहीं हैं।

ठीक यही बात बाइबल हमें नरक के विषय में भी बताती है। अकसर लोग स्वर्ग के बारे में ही सुनना चाहते हैं। जब उन्हें नरक के बारे में बताया जाता है तो वे कहते हैं कि आप हमें डरा रहे हैं। परन्तु इसमें डरने की क्या बात है ? सच्चाई से केवल वही मनुष्य डरता है

जो सच्चाई के विरुद्ध काम करता है। यद्यपि बाइबल स्वर्ग और नरक दोनों के ही बारे में हमें बताती है, परन्तु परमेश्वर की यही इच्छा है कि हम सब उसकी इच्छा पर चलकर उसके पास स्वर्ग में जाएं। क्योंकि मनुष्य से वह प्रेम करता है। बाइबल में लिखा है कि परमेश्वर नहीं चाहता कि कोई भी मनुष्य अपने पापों के कारण नाश हो। इसी कारण बाइबल हमें सिखाती है, कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा महान् प्रेम रखा कि उसने हमारे पापों के छुटकारे के लिये अपने पुत्र यीशु को दे दिया ताकि उसमें विश्वास लाकर प्रत्येक मनुष्य अपने पाप के दन्ड से बच जाए और स्वर्ग में अनन्त जीवन पाने के योग्य बन जाए। अपने चेलों से प्रभु यीशु ने कहा था कि, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" (यूहन्ना १४:६)। इसी प्रकार एक अन्य जगह यीशु ने कहा था, कि, "सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है; और बहुतेरे हैं जो उससे प्रवेश करते हैं। क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।" (मत्ती ७:१३, १४)। इस का अर्थ यह है कि जिस मार्ग पर आज आप चल रहे हैं वही कल आप का अन्त होगा। चौड़ा मार्ग वह है जिस पर मनुष्य चलना चाहता है, परन्तु सकरा मार्ग वह है जिस पर परमेश्वर मनुष्य को चलाना चाहता है। चौड़े मार्ग पर कोई रोक-टोक नहीं है, वह मन-मानी का मार्ग है। और क्या यह सच नहीं है कि आज अनेक लोग ऐसा ही जीवन व्यतीत कर रहे हैं? वे जो करना चाहते हैं वही करते हैं। वे परमेश्वर की इच्छा को नहीं जानना चाहते, उसकी मर्ज़ी पर नहीं चलना चाहते। उनके लिये परमेश्वर को उनके जीवन पर कोई अधिकार नहीं है। परन्तु सकरा मार्ग परमेश्वर का मार्ग है उस मार्ग पर हम केवल परमेश्वर की इच्छा के अनुसार ही चल सकते हैं। परन्तु इस बात पर ध्यान दें, कि प्रभु ने कहा था कि चौड़ा मार्ग जबकि मनुष्य को विनाश

में पहुंचाता है, दूसरी ओर सकरा मार्ग मनुष्य को जीवन में पहुंचाता है। जीवन में प्रवेश करने का अर्थ है उस स्थान में प्रवेश करना जहां मनुष्य सदा परमेश्वर की सहभागिता में उसके साथ रहेगा। परन्तु विनाश में पहुंचने का अर्थ है उस जगह जाना जहाँ परमेश्वर नहीं है; जहाँ मनुष्य सदा परमेश्वर से अलग रहेगा। और बाइबल में उस स्थान को एक आग की झील कहा गया है। न्याय के दिन का वर्णन करके बाइबल का लेखक एक जगह कहता है कि उस दिन जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ नहीं मिलेगा वह उस आग की झील में डाला जाएगा। (प्रकाशितवाक्य २०:१५)।

मित्रो, स्वर्ग जितना अधिक सुंदर है नरक उतना ही अधिक भयानक है। और नरक कि भयानकता का अनुमान हम प्रभु यीशु के इन शब्दों से लगा सकते हैं: "यदि तेरा हाथ तुझे ठोकर खिलाए," यीशु ने कहा था, "तो उसे काट डाल," क्योंकि "टुन्डा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है कि दो हाथ रहते हुए नरक के बीच उस आग में डाला जाए जो कभी बुझने की नहीं। और यदि तेरा पांव तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट डाल। लंगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है, कि दो पाँव रहते हुए तू नरक में डाला जाए। और यदि तेरी आंख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकाल डाल, काना होकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है कि दो आंख रहते हुए तू नरक में डाला जाए। जहां उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती।" (मरकुस ९:४३-४८)। प्रभु यीशु के इन शब्दों से हम यह सीखते हैं, कि नरक एक ऐसी आग है जो कभी भी नहीं बुझेगी और जिस प्रकार धर्मी परमेश्वर के राज्य में सदा उसके साथ रहेंगे उसी प्रकार अधर्मी लोग नरक में हमेशा के लिये रहेंगे। "और ये अनन्त दन्ड भोगेंगे," यीशु ने कहा था, "परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।" (मत्ती २५:४६)। अर्थात् जिस प्रकार स्वर्ग अनन्त है उसी प्रकार नरक भी अनन्त हैं। बाइबल यह नहीं कहती कि नरक में पहुंचकर मनुष्य का अस्तित्व समाप्त हो जाता है, परन्तु जिस

प्रकार स्वर्ग में मनुष्य अपने धर्मी जीवन के कारण हमेशा के लिये परमेश्वर के साथ रहैगा, वैसे ही अधर्मी मनुष्य अपने अधर्म के कारण नरक में सदा विद्यमान रहेगा। क्योंकि मनुष्य एक आत्मिक प्राणी है, वह परमेश्वर के स्वरुप पर बनाया गया था, इसलिये वह परमेश्वर के ही समान अमर है। वह हमेशा वर्तमान रहेगा। शारीरिक मृत्यु के द्वारा मनुष्य की आत्मा उसकी देह से अलग हो जाती है, और न्याय के दिन के आने तक वह अधोलोक में रहती है। परन्तु न्याय के दिन प्रत्येक मनुष्य की देह उसी प्रकार जिलाई जाएगी जैसे कि यीशु मसीह जी उठा था। परन्तु जिलाई गई देह आत्मा ही की तरह अविनाशी होगी। और वह अविनाशी देह अपनी अविनाशी आत्मा के साथ सदा के लिये स्वर्ग या नरक में प्रवेश करेगी। (१ कुरिन्थियों १५; २ कुरिन्थियों ५)।

क्या यह बात वास्तव में बड़ी ही अच्छी और भली नहीं है कि इस से पहिले कि पृथ्वी पर का यह डेरा सरीखा हमारा घर गिराया जाए और हम उस अनन्तकाल में हमेशा के लिये प्रवेश करें जहां से कभी कोई वापस नहीं आएगा परमेश्वर ने हमें पहिले ही से यह बता दिया है कि उस अनन्तकाल में रहने के केवल दो ही स्थान हैं, और यदि हम उन में से एक में प्रवेश नहीं करेंगे तो हम अवश्य ही दूसरे में प्रवेश करेंगे? उस ने हमें बता दिया है कि जगत का चौड़ा मार्ग मनुष्य को नरक के अनन्त विनाश में पहुंचाएगा; परन्तु जिस सकरे मार्ग को उसने स्वर्ग से प्रकट किया है केवल वही मनुष्य को स्वर्ग में पहुंचाएगा।

क्या आपने उसके सकरे मार्ग को स्वीकार किया है? क्या आप ने उस प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास किया है जिसने आप के पापों का प्रायश्चित करने के लिये अपने प्राणों को दिया है? उसकी आज्ञा है कि प्रत्येक मनुष्य पाप से अपना मन फिराए और अपने पापों की क्षमा के लिये उसके नाम से बपतिस्मा लें। (यूहन्ना ८:२४ प्रेरितों २२:१६) वह आप का उद्धार करना चाहता है। वह आप को पाप के दन्ड से मुक्त करके स्वर्ग में अनन्त जीवन देना चाहता है। प्रभु अपने पास आने के लिये आप को सामर्थ दे।

अधिक जानकारी तथा बाइबल के पाठों को प्राप्त करने के लिये लिखिए :

CHURCH OF CHRIST
P.O. Box 3815
New Delhi-110049